नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 050
दि. 22.11.2025,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

पाकिस्तान से आईएसआई के इशारे पर चीन-तुर्की से बने घातक हथियार भारत में भेजे जा रहे थे, दिल्ली क्राइम ब्रांच ने तोड़ा इंटरनेशनल तस्करी नेटवर्क

(जीएनएस)। दिल्ली की सड़कों पर दिखने वाली सामान्य भीड़भाड़, रोज़मर्रा की आवाजाही और शहर की तेज़ रफ्तार के पीछे कई बार ऐसे रहस्य छिपे होते हैं, जिनका अंदाज़ा आम आदमी को भी नहीं होता। पुलिस और जांच एजेंसियों की सूक्ष्म निगाहें अक्सर ऐसे ही खतरों की भनक पाती हैं, जो दूर बैठकर देश की सुरक्षा को जड़ से हिलाने की तैयारी कर रहे होते हैं। ऐसा ही एक गहरा और खतरनाक खुलासा दिल्ली क्राइम ब्रांच ने किया है, जिसने पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई से जुड़े एक व्यापक, अंतरराष्ट्रीय हथियार तस्करी गिरोह का भंडाफोड़ कर दिया।

क्राइम ब्रांच द्वारा पकड़ा गया यह नेटवर्क कोई साधारण तस्करी सिंडिकेट नहीं, बल्कि एक ऐसा संगठित, धारदार और बेहद रणनीतिक मॉड्यूल था, जो पाकिस्तान में छिपे संचालकों के इशारे पर चीन और तुर्की में बने हाई-एंड हथियार भारत में भेज रहा था। पुलिस की गिरफ्त में आए चार अहम सदस्य इस बड़े रैकेट के सिर्फ एक हिस्सा हैं। इनके पास से बरामद 10 विदेशी पिस्टल और 92 जिंदा कारतूस पुलिस के हाथ लगने वाली एक चाबी हैं, जो शायद बहुत बड़ा काला दरवाज़ा खोल सकती हैं—एक ऐसा दरवाज़ा, जिसके पीछे गैंगस्टरों, भाड़े के अपराधियों और गुंडा गिरोहों तक हथियार पहुँचाने का पूरा नेटवर्क छिपा हुआ था।

बरामद किए गए हथियारों में सबसे अधिक चिंता तुर्की में बनी PX-5.7 पिस्टल ने पैदा की है। यह सामान्य हथियार नहीं, बल्कि एक ऐसा हाई-टेक, हाई-प्रिसिजन और महंगा असलहा है जिसे दुनिया की कई स्पेशल फोर्स इस्तेमाल करती हैं। इतने उन्नत हथियार जब अपराधियों के हाथों में पहुँचते हैं, तो उनका एक-एक कारतूस कई निर्दोष ज़िंदगियों को इतिहास बना सकता है। यही बात इस पूरी तस्करी को और भी खतरनाक बनाती है।

पुलिस की जांच के अनुसार, इस इंटरनेशनल नेटवर्क का संचालन पाकिस्तान में बैठे आईएसआई से जुड़े लोगों द्वारा किया जा रहा था। चीन और तुर्की से हथियार पहले पाकिस्तान पहुंचते, वहीं से साजिश के तहत उनकी भारत में तस्करी की जाती थी। यह प्रक्रिया कोई एक-दो बार नहीं, बल्कि लगातार चल रही थी। हर बार नए हथियार, नई तकनीक और नए तस्करी मार्ग का इस्तेमाल किया जाता था ताकि सुरक्षा एजेंसियों को भ्रमित किया जा सके।

दिल्ली क्राइम ब्रांच यह भी पता लगा रही है कि इस गिरोह ने अब तक कितने हथियार भारत में सप्लाई किए, किन राज्यों में, किन गैंगों और किन बदमाशों के हाथों में ये असलहे पहुंचे। जांच में मोबाइल लोकेशन, बैंक खाते, व्हाट्सऐप चैट, क्रिप्टो ट्रांजैक्शन और सोशल मीडिया की कड़ियां खंगाली जा रही हैं। एक-एक लिंक खुलने से नए चेहरे सामने आ रहे हैं—कई ऐसे, जिनका अपराध जगत में बड़ा नाम है और जिन्हें इन हथियारों की बेतहाशा जरूरत थी।

क्राइम ब्रांच के अधिकारी बताते हैं कि इन हथियारों को खरीदने वालों में दिल्ली-एनसीआर समेत उत्तर भारत के कई कुख्यात गैंग शामिल थे। बिश्नोई गिरोह तक भी इन विदेशी पिस्टलों की सप्लाई की जा रही थी। इस तरह के हथियार अपराधियों के हाथों में होने का सीधा मतलब है—खतरनाक हमला, तेज़ गति वाली हत्या, और पुलिस से सीधा मुकाबला करने की क्षमता।

स्पेशल सीपी देवेश श्रीवास्तव ने बताया कि जब्त किए गए कंसाइनमेंट की गुणवत्ता और मात्रा दोनों बताते हैं कि यह नेटवर्क कितना एडवांसड था। PX-5.7 के अलावा चीन में बनी PX-3 पिस्टल भी तस्करी कर भारत भेजी जा रही थी। इन दो प्रकार के हथियारों से स्पष्ट होता है कि हमारी सीमाओं के बाहर बैठे दुश्मन किस तरह अलग-अलग देशों से तकनीक लेकर भारत में हथियारों की बारिश करने की कोशिश कर रहे हैं।

जॉइंट सीपी सुरेंद्र कुमार ने कहा कि यह ऑपरेशन सिर्फ एक गिरोह की गिरफ्तारी नहीं, बल्कि सीमा पार से भारत को अस्थिर करने की बड़ी कोशिश पर प्रहार है। इन गिरफ्तारियों ने इस पूरे नेटवर्क की जड़ें खोलने का मौका दे दिया है। अब सामने आए चार लोगों के पीछे छिपे असली मास्टरमाइंड, उनके फंडर, हथियार सप्लायर और वे गैंग जिनके पास यह हथियार पहुँचने वाले थे—सबकी जांच तेजी से आगे बढ़ रही है।

यह खुलासा एक बात साफ करता है—कि दुश्मन बदलते वक़्त के साथ अपने तरीके और रास्ते बदल रहा है। चीन और तुर्की में बने हथियारों का पाकिस्तान के रास्ते भारत में भेजा जाना सिर्फ तस्करी नहीं, बल्कि भारत को अंदर से अस्थिर करने की साजिश है। इस बार पुलिस ने वक्त रहते इस नेटवर्क पर प्रहार किया है, लेकिन इस पूरे मामले ने एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है—क्या हमारी सीमाओं के उस पार कोई ऐसा खेल खेला जा रहा है, जिसकी बुनियाद खून और बारूद पर रखी गई है?

देश की सुरक्षा एजेंसियों की निगाहें अब इस मामले पर टिकी हैं, क्योंकि जो हथियार पकड़े गए हैं, वे शायद इस काले खेल की शुरुआत हों, अंत नहीं।

PMFBY में ऐतिहासिक विस्तार: जंगली जानवरों और जलभराव से बर्बाद फसलों को भी मिलेगा पूरा बीमा, किसानों की बरसों पुरानी पीड़ा अब सुनी गई

(जीएनएस)। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, जिसे किसानों की सुरक्षा की रीढ़ कहा जाता है, अब एक ऐसे मोड़ पर पहुंच गई है जहां इसे सचमुच किसान-हितैषी कहना सार्थक लगता है। केंद्र सरकार ने वह निर्णय लिया है, जिसका इंतजार देश के करोड़ों किसान वर्षों से कर रहे थे। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने यह घोषणा करते हुए न सिर्फ किसानों की उम्मीदों को मजबूत किया, बल्कि फसल जोखिमों की वास्तविकता को भी स्वीकार किया जो अब तक कागज़ों में छिपी रह जाती थी। सरकार ने अब फसल बीमा के दायरे में दो ऐसे नुकसान शामिल कर लिए हैं, जो जमीन पर खेती करते हुए हर किसान की सबसे आम और सबसे तकलीफ़देह समस्याओं में से थे—जंगली जानवरों की फसल तबाही और अतिवृष्टि के कारण खेतों में होने वाला जलभराव।

देश के गांवों में रात होते ही कई किसानों की चिंताएं शुरू हो जाती थीं। खेत में उगती फसलों को कोई नीलगाय रौंद दे, कोई जंगली सूअर खेत पार कर जाए, या अचानक चीतल, बांका या दूसरे वन्यजीव फसलों को चट कर जाएं—ऐसी घटनाएं

किसानों के लिए उतनी ही आम थीं, जितनी दर्दभरी। उपज का महीनों पुराना इंतजार एक ही रात में मिट्टी में मिल जाता था, पर बीमा कंपनियां इस नुकसान को "स्वाभाविक जोखिम" की श्रेणी से बाहर बताकर मुआवजा देने से इनकार कर देती थीं। वर्षों से किसान पंचायतों में, किसान यात्राओं में और सरकारी बैठकों में यही आवाज़ उठती रही कि वन्यजीवों द्वारा की गई क्षति भी फसल नुकसान ही है, और उसका हकदार किसान ही है। आखिरकार सरकार ने इसी पीड़ा को स्वीकार करते हुए घोषणा कर दी कि अब जंगली जानवरों से होने वाली क्षति भी PMFBY के तहत पूरी तरह बीमाकृत नुकसान मानी जाएगी।

फसलों के नुकसान का दूसरा बड़ा कारण—अतिवृष्टि और जलभराव—ग्रामीण क्षेत्रों में हर साल एक बाढ़ की तरह लौटता है। मानसून का अनिश्चित मिज़ाज कभी खेतों को सुखा देता है तो कभी इतना पानी बरसा देता है कि बीज, पौधे और खड़ी फसलें सब पानी में समा जाते हैं। कई बार खेतों में पानी उतरने में हफ्ते लग जाते हैं और किसान अपनी ही जमीन पर खड़े होकर असहाय देखते रह जाते हैं कि उनकी मेहनत लहरों के नीचे धीरे-धीरे खत्म हो रही है। इस नुकसान की पहचान की मांग किसान पिछले कई वर्षों से कर रहे थे, लेकिन अब जाकर इसे प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में आधिकारिक रूप से शामिल कर लिया गया है।

शिवराज सिंह चौहान ने सोशल मीडिया के माध्यम से यह जानकारी साझा करते हुए कहा कि ये बदलाव किसानों की "पुरानी, वास्तविक और न्यायसंगत" मांगें थीं। उन्होंने कहा कि पीएमएफबीवाई को बदलते मौसम, बदलते जोखिम और बदलते कृषि परिदृश्य के अनुरूप ढालना ही इस योजना का उद्देश्य है, और इन दोनों बड़े सुधारों के साथ अब यह योजना और व्यापक, अधिक संवेदनशील और किसानों के अधिक करीब पहुंच चुकी है।

सरकार का यह फैसला सिर्फ कागज़ी बदलाव नहीं माना जा सकता, क्योंकि देश के लाखों किसान जो अक्सर वन्यजीवों से जूझते हुए रातें खेतों में गुजारते थे और जिनके खेतों में जलभराव की एक बारिश पूरी खेती को डुबो देती थी, अब उन्हें अपने नुकसान की भरपाई के लिए किसी दफ्तर के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। यह राहत सीधे उनके हाथों तक पहुंचने का रास्ता बना चुकी है। यह फैसला ऐसे समय में आया है जब जलवायु परिवर्तन की मार खेती पर पहले से कहीं ज्यादा है और किसानों की आर्थिक अस्थिरता उन्हें कगार तक पहुंचा देती है।

पीएमएफबीवाई के इस ऐतिहासिक विस्तार के साथ सरकार ने दिखा दिया है कि नीति सिर्फ कागज पर नहीं, बल्कि खेत की नमी में भी जड़ पकड़ सकती है।

दुबई आसमान में भारतीय तेजस का दर्दनाक गोता — सेकंडों में बेकाबू हुआ गर्व का पंख, पर पायलट ने बचाई जान

(जीएनएस)। दुबई एयर शो 2025 का आख़िरी दिन भारतीय गर्व और वैश्विक तकनीकी प्रदर्शन का मंच होना चाहिए था, लेकिन दोपहर का सूरज अचानक एक ऐसी घटना का गवाह बन गया जिसकी कल्पना शायद किसी ने नहीं की थी। भारतीय वायुसेना का स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस, जो पिछले कई वर्षों से देश की तकनीकी आत्मनिर्भरता का प्रतीक बना हुआ है, अपनी प्रदर्शन उड़ान की शुरुआत के कुछ ही क्षण बाद भयावह तरीके से दुर्घटनाग्रस्त हो गया। दुर्घटना इतनी अचानक और अप्रत्याशित थी कि दर्शकों में मौजूद विशेषज्ञ भी इसकी वजह का अंदाज़ा लगाने में असमर्थ रह गए, पर राहत की सबसे बड़ी बात यह रही कि विमान को उड़ा रहे पायलट, विंग कमांडर रैंक के बेहद अनुभवी अधिकारी, समय रहते खुद को विमान से बाहर निकालने में सफल रहे और उनकी जान बच गई। दोपहर दो बजे जैसे ही तेजस ने ताक़तवर गर्जना के साथ रनवे से उड़ान भरी, हर नजर उसी पर टिक गई थी। विमान ने कुछ ही पलों में ऊंचाई पकड़नी शुरू की, लेकिन अचानक उसका संतुलन बिगड़ गया। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि तेजस ने जैसे

एक अनियंत्रित मोशन में नीचे की ओर गोता लगाया, मानो किसी अदृश्य शक्ति ने उसे खींच लिया हो। यह सब कुछ सेकंडों में हुआ—विमान ने अपनी दिशा खोई, एक तीव्र झुकाव के साथ जमीन की ओर बढ़ा, और फिर एक जबरदस्त धमाके के साथ रनवे के पास टकरा कर धधकता मलबा बन गया। तेजस का यह मलबा, जो अभी कुछ सेकंड पहले हवा में स्टील के बाज की तरह दिख रहा था, वहीं बिखरा पड़ा था।

दुबई पुलिस, दमकल और एयरपोर्ट अथॉरिटी की टीमें तुरंत घटनास्थल पर पहुंच गईं और पूरे क्षेत्र को घेराबंदी कर दिया गया। सौभाग्य से, जिस जगह विमान गिरा, वहां न कोई दूसरा विमान था और न ही कोई व्यक्ति। इस तरह एक संभावित बड़ी त्रासदी केवल पायलट की त्वरित प्रतिक्रिया और नियंत्रित इजेक्शन के कारण टल गई। विमान पूरी तरह नष्ट हो चुका था, लेकिन पायलट की सुरक्षा ने पूरे देश में राहत की एक बड़ी सांस भरवा दी।

भारतीय वायुसेना ने पुष्टि की कि यह तेजस के इतिहास में पहला बड़ा हादसा है। दो दशकों में इस स्वदेशी लड़ाकू विमान ने अद्भुत विश्वसनीयता दिखाई है और दुनिया भर के एयर शो में बेहतरीन प्रदर्शन किया है। इस दुर्घटना ने भले ही एक क्षणिक झटका दिया हो, लेकिन इसका तकनीकी मूल्यांकन अब विस्तृत जांच का विषय होगा। एयर फोर्स ने कोर्ट ऑफ इंक्वायरी गठित कर दी है, जो टेकऑफ के तुरंत बाद आई इस अप्राकृतिक गड़बड़ी की तह तक जाएगी। प्रारंभिक अनुमानों में तकनीकी खराबी या इंजन के किसी अचानक फेलियर की संभावना जताई जा रही है, लेकिन अंतिम निष्कर्ष विशेषज्ञ जांच के बाद ही सामने आएंगे।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने घटना के बाद कहा कि पायलट का सुरक्षित होना सबसे बड़ी राहत है और दुर्घटना के वास्तविक कारणों को जल्द ही स्पष्ट कर दिया जाएगा। एयर शो के आयोजकों ने सुरक्षा को और कड़ा करने की घोषणा की है, मगर कार्यक्रम पूर्व निर्धारित समय के अनुसार जारी रहेगा।

दुबई की धूप में उस टूटे पड़े तेजस को देखकर दुनिया ने तकनीक की अनिश्चितता और पायलट के साहस दोनों को एक साथ देखा। एक तरफ यह हादसा भारतीय रक्षा निर्माण यात्रा में एक कठिन क्षण है, तो दूसरी तरफ पायलट की सूझबूझ और प्रशिक्षित प्रतिक्रिया भारतीय वायुसेना की मजबूती और दक्षता की जीवंत मिसाल भी बन गई है। तकनीक असफल हो सकती है, लेकिन मनुष्य की तत्परता—वही एक बार फिर विजय हुई।

छह शहर, छह मासूम ज़िंदगियाँ और एक सन्न करने वाला सवाल-भारत के स्कूलों में ऐसा क्या टूट रहा है जो हमारे बच्चे जान देने तक को मजबूर हो रहे हैं?

(जीएनएस)। देश की सुबहें इन दिनों बेहद भारी हो गई हैं। अखबार खोलो, न्यूज़ चैन करो, सोशल मीडिया स्क्रॉल करो—हर जगह से मासूम चेहरों की तस्वीरें उभर रही हैं, जिनकी मुस्कानें कुछ दिनों पहले तक बिल्कुल सामान्य थीं, लेकिन आज वे तस्वीरें किसी गहरे अंधेरे की गवाही दे रही हैं। बीते कुछ दिनों में देश के छह राज्यों—दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और फिर से दिल्ली—से छह बच्चों की आत्महत्याएं सामने आईं। अलग-अलग शहर, अलग-अलग स्कूल, अलग-अलग बच्चे लेकिन वजह लगभग एक ही थी—स्कूलों में टॉर्चर, बुलिंग, मारपीट, मानसिक प्रताड़ना और वह खामोशी, जिसने इन बच्चों को भीतर ही भीतर तोड़ दिया।

यह कोई सामान्य रिपोर्ट नहीं है, बल्कि उन चीखों की कहानी है जो कभी सुनी ही नहीं गईं, उन आँसुओं का लेखा-जोखा है जिन्हें टीचर ने 'ड्रामा' कहकर ठुकरा दिया, और उन सवालों का दर्द है जो दुनिया छोड़कर चले गए बच्चों ने अपने पीछे छोड़ दिए हैं।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में 4th क्लास की बच्ची अमायरा ने चौथी मंज़िल से कूदकर जान दे दी। यह ख़बर सिर्फ जयपुर ही नहीं, पूरे देश की रूह को हिला देने वाली थी। चौथी कक्षा सिर्फ नौ साल की उम्र और जीवन की सबसे बड़ी शिकायत यह कि वह लगातार बुलिंग का शिकार हो रही थी। उसके पिता ने शुरुआत से ही कहा था कि स्कूल प्रशासन सब जानता था, लेकिन किसी ने बच्ची की आवाज़ नहीं सुनी। अब CBSE की दो-सदस्यीय कमेटी की रिपोर्ट सामने आई है, जिसने स्कूल को दोषी पाया है।

रिपोर्ट में साफ कहा गया है कि अमायरा कई महीनों से तानों, गालियों और अपमान का सामना कर रही थी। वह अपनी आखिरी 45 मिनट में पाँच बार टीचर के पास मदद मांगने गई, लेकिन हर बार उसे टाल दिया गया। सोचिए, एक बच्ची बार-बार मदद के लिए किसी वयस्क के सामने खड़ी हो और हर बार खाली हाथ लौट आए—क्या उसकी मौत सिर्फ आत्महत्या है या हमारे स्कूल सिस्टम की दर्दनाक नाकामी?

मध्य प्रदेश के रीवा जिले में 11वीं की एक छात्रा ने फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। कॉपी में लिखा गया सुसाइड नोट पढ़कर किसी का भी दिल कांप जाए। उसने लिखा था कि उसका टीचर 'सजा' देने के नाम पर उसका हाथ पकड़ लेता था, उंगलियों के बीच पेन दबा देता था, और बार-बार यह दिखाता था कि उसका हाथ 'कितना ठंडा' है। वह छात्रा इसे सहन नहीं कर पाई। उस एक नोट में छिपा हर शब्द शिक्षक की विकृत मानसिकता का पर्दाफाश करता है—और उस व्यवस्था का भी, जहां बच्चों की आवाज़ कहीं खो जाती है।

प्रयागराज में 10वीं का छात्र शिवम यादव स्कूल के अंदर ही संदिग्ध परिस्थितियों में मरा मिला। शरीर पर चोट के निशान, पहले से चली आ रही नाराज़गी, और स्कूल द्वारा बिना परिवार को बताए बच्चे को अस्पताल ले जाना—इन सबने एक खतरनाक कहानी को जन्म दिया। FIR दर्ज हुई, परिजनों का आरोप है कि शिवम को मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता था। सवाल उठता है—स्कूल, जहां बच्चों को सुरक्षित होना चाहिए, क्या वहां डर और मारपीट का साम्राज्य बन चुका है?

महाराष्ट्र के कल्याण में अर्नव खैरे नाम के लड़के ने आत्महत्या कर ली क्योंकि लोकर ट्रेन में कुछ लोगों ने उसे मराठी न बोलने पर पीट दिया था। यह घटना न सिर्फ शिक्षा प्रणाली, बल्कि समाज के भीतर फैली असहिष्णुता के उस जहर की ओर इशारा करती है, जो भाषा, जाति, धर्म, पहनावे या किसी भी भिन्नता को स्वीकार करने से इंकार करता है। एक बच्चा सिर्फ इसलिए अपनी जान दे दे कि वह किसी की भाषा में जवाब नहीं दे पाया—हमारी सभ्यता के लिए यह कलंक है।

वसई में 13 साल की छात्रा को 10 मिनट देर से आने के कारण इतनी कठोर सजा मिली कि उसकी जान ही चली गई। बैग पीठ पर टांगे 100 उठक-बैठक कोई भी वयस्क यह सज़ा सोचे तो कांप जाए। वह बच्ची घर लौटी तो उसकी हालत बिगड़ती चली गई। अस्पताल पहुंचाने के बाद भी वह नहीं बच पाई। टीचर को गैरइरादतन हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन क्या किसी गिरफ्तारी से उस मासूम जान की भरपाई हो सकती है? और दिल्ली का बेहद दिल दहला देने वाला मामला—सेंट कोलंबस स्कूल का 10वीं का छात्र शौर्य पाटिल। क्लास में लगातार अपमान, ताने, मानसिक टॉर्चर और फिर घर लौटते हुए राजेंद्र नगर मेट्रो स्टेशन से कूदकर आत्महत्या। उसके पास से मिली चिट्ठी ने पूरे देश को झकझोर दिया—उसने साफ लिखा कि उसकी मौत की जिम्मेदार स्कूल की प्रिंसिपल और टीचर हैं। पुलिस ने FIR दर्ज कर ली है।

इन छह कहानियों के बाद एक भयानक सच सामने आता है—हमारे स्कूल बच्चों को पढ़ाना तो दूर, उन्हें जीने की भी सुरक्षित जगह नहीं दे पा रहे हैं। टीचर, जिन्हें माता-पिता के बाद सबसे बड़ा सहारा होना चाहिए, कई बार डर का कारण बन रहे हैं। बुलिंग, मारपीट, भेदभाव, दबाव, अवमानना—इन सबके बीच बच्चे टूट रहे हैं, और टूटकर खत्म हो जा रहे हैं।

यह सिर्फ छह कहानियाँ नहीं, बल्कि चेतावनी हैं कि हम कहीं न कहीं अपने भविष्य—अपने बच्चों—को खो रहे हैं। आज जो बच्चा डरा है, कल वह समाज से कटेगा। आज जो बच्चा चुप है, कल वह अंदर से खाली हो जाएगा। और जो बच्चा कहीं भी आवाज़ न उठा पाए, वह शायद इसी तरह अंधेरे में डूब जाए।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

नीतीश को सतर्क रखेंगी गठबंधनी महत्वाकांक्षाएं

आखिरकार सबसे लंबे कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री के रूप में नीतीश कुमार इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गए। जदयू सुप्रीमो ने मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के साथ ही सत्ता का एक नया कार्यकाल शुरू कर दिया। यद्यपि हालिया चुनाव में भाजपा ने जदयू से ज्यादा सीटें हासिल करके सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उपस्थिति दर्ज करायी है, लेकिन इसके बावजूद चार कम सीट जीतने वाले जदयू के 74 वर्षीय दिग्गज को मुख्यमंत्री बने रहने देना ही बेहतर समझा है। वहीं सहयोगी दल भाजपा से सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा के उपमुख्यमंत्री पद बरकरार रहे। निस्संदेह, नीतीश का पिछला कार्यकाल उतार-चढ़ाव भरा रहा था। उन्होंने पहले भाजपा के साथ सरकार बनायी और मनभेद के चलते महागठबंधन में शामिल हुए। फिर पलटी लेकर भाजपा के साथ सरकार में शामिल हो गए थे। इसके बावजूद बिहार की जनता ने उनकी इस उलट-पलट को माफ ही कर दिया। संभवतः उनकी इस अपील पर वोट दिया कि यह उनकी आखिरी पारी है। जनता ने उनके नेतृत्व वाली डबल इंजन सरकार के स्थायित्व पर भरोसा जताया। शायद बिहार की जनता जंगल राज के दुःस्वप्न को नहीं भूली है। एक बात तो तय है कि राज्य की जनता ने तमाम किंतु-परंतुओं के बावजूद बिहार के भविष्य के लिये उन्हें बेहतर माना है। यही वजह है कि रिकॉर्ड दसवीं बार शपथ लेने वाले नीतीश को बधाई देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें सुशासन के सिद्ध ट्रैक रिकॉर्ड वाला एक अनुभवी प्रशासक बताया है। लेकिन राजनीतिक पंडित कयास लगा रहे हैं कि भाजपा कब तक छोटे भाई की भूमिका में रहेगी? विपक्ष को संदेह है कि नीतीश शायद ही अपना कार्यकाल पूरा करेंगे। उन्हें आशंका है कि भाजपा किसी न किसी स्तर पर बिहार में पार्टी का मुख्यमंत्री बनाना चाहेगी। राजनीतिक विश्लेषक महाराष्ट्र का उदाहरण देते हैं, जहां भाजपा ने पहले शिवसेना के एकनाथ शिंदे को मुख्यमंत्री बनाया और बाद में उन्हें हटाकर देवेंद्र फड़नवीस को कुर्सी पर बैठा दिया।

वहीं कुछ राजनीतिक पंडितों का तर्क है कि भाजपा के पास केंद्र में पूर्ण बहुमत नहीं है, इसलिए एनडीए सरकार को सहारा देने के लिये भाजपा को नीतीश के समर्थन की जरूरत बनी रहेगी। इस बात से यह निष्कर्ष निकाला जा रहा है कि जदयू अपना अस्तित्व बचाये रखने के लिये बेहतर स्थिति में है। बहरहाल, नीतीश की तात्कालिक प्राथमिकताएं बेरोजगारी दूर करने और पलायन पर अंकुश लगाने की होनी चाहिए। हकीकत यह है कि राज्य में रोजगार संकट के चलते बिहार के तीन घरों में से दो का एक सदस्य दूसरे राज्य में काम करने को मजबूर है। साथ ही नीतीश को सरकार बनाने में भरपूर समर्थन देने वाली महिलाओं की आकांक्षाओं के अनुरूप, उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के प्रमुख चुनावी वायदे को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करना चाहिए। इसके अलावा उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि जदयू मजबूत और अक्षुण्ण बना रहे। यह अवश्यंभावी है कि भाजपा और चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी उन्हें सतर्क बनाए रखेगी। भाजपा के मन में यह कसक जरूर रहेगी कि सबसे बड़े दल के रूप में उदय होने पर भी पार्टी बिहार में अब तक अपनी सरकार नहीं बना पायी है। ऐसे में नीतीश को बाहरी विपक्षी से तो नहीं, गठबंधन के दलों की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं से जूझना पड़ेगा। वहीं प्रचंड बहुमत देने पर जनता की उम्मीदें भी उफान पर रहेंगी। राजग द्वारा चुनाव के दौरान तमाम वायदे किए गए थे, लेकिन राज्य की कमजोर आर्थिक स्थिति के मद्देनजर इन सब वायदों को पूरा करना आसान न होगा। वहीं दूसरी ओर नीतीश के सामने उनकी सेहत और बढ़ती उम्र को लेकर भी चुनौती पैदा हो सकती है। जिसको लेकर विपक्ष पूरे चुनाव अभियान के दौरान लगातार हमलावर बना रहा है। साथ ही बिहार की डेढ़ करोड़ महिलाओं को दस हजार रुपये लगातार दे पाना भी परेशानी का सबब बन सकता है। वहीं गठबंधन सरकार के लिए चुनाव से पहले एनडीए गठबंधन द्वारा किए गए मुफ्त अनाज, मुफ्त बिजली,मुफ्त इलाज,सामाजिक सुरक्षा पेंशन देने तथा पचास लाख पक्के मकान के वायदे को हकीकत में बदलने को वित्तीय संसाधन जुटाना भी एक बड़ी चुनौती साबित होगी।

बच्चों की उम्र के मुताबिक तय हो एआई अपनाना

> “कक्षा तीन से कृत्रिम बुद्धिमत्ता की पढ़ाई अनिवार्य बनाना जल्दबाजी ही होगी। यह आयु बच्चों के संज्ञानात्मक, मानसिक और बौद्धिक विकास की है। स्कूलों में बालसुलभ शैक्षणिक परिवेश हो जहां अनुशासन के बीच उनमें सरलता, जिज्ञासा व खिलंदड़पन बना रहे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) अब यहां आ चुकी है, और ऐसा लगता है कि आपको और मुझे, आज नहीं तो कल, इससे समझौता करना ही पड़ेगा। फिर भी, यह बात मुझे परेशान करती है कि कक्षा तीन (मुश्किल से नौ साल का बच्चा) के छात्रों को भी एआई एक अनिवार्य विषय के रूप में अब सीखना पड़ेगा। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने फैसला लिया है कि 2026-27 के शैक्षणिक सत्र से कक्षा तीन से आगे के सभी छात्रों के लिए एआई पढ़ाया जाए।

इस कदम के अर्थ को गहराई से समझने के लिए, या जिसको शिक्षा मंत्रालय 'आधुनिक इतिहास में महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम सुधारों में से एक' ठहरा रहा है, इस पर, जीवन की लय, तकनीक, संस्कृति और शिक्षा शास्त्र से संबंधित दो मुद्दों पर विचार करना ज़रूरी हो जाता है। शुरुआत करते हुए, यह समझना ज़रूरी है कि इस अति-आधुनिक समय में, हम तकनीकी नवाचार के हर नए हिस्से को अंगीकार करने के लिए लगभग मजबूर हैं - और अक्सर, बिना जरा सी भी अस्पष्टता के। हालांकि, यह बाध्यता अक्सर एक प्रकार के प्रलोभन में बदल जाती है। तीन साल के बच्चों को भी स्मार्टफोन से 'खेलते' देखना कोई असामान्य बात नहीं है; और स्क्रीन की इस लत के परिणाम में उसके लिए खुले, विशाल आकाश को निहारना, किसी पेड़ को देखना, किसी पक्षी को उड़ते हुए देखकर रोमांचित होना या किसी फूल और तितली की लयबद्ध अठखेली को महसूस करना लगातार मुश्किल होता जा रहा है। जी हां, तकनीकी उपकरण मानो उनकी आत्मा में घर कर चुके हैं।

चूंकि हम जीवन के लगभग हर क्षेत्र में तकनीक की इस घुसपैठ को सामान्य मानने लगे हैं, इसलिए कोई हैरानी नहीं कि सीबीएसई भी यह महसूस करता है कि कक्षा तीन के बच्चों को भी पीछे नहीं रहना चाहिए, और उन्हें एआई के बुनियादी अवयव 'खेल-खेल में/संवादात्मक' तरीकों से सीखने शुरू कर देने चाहिए। फिर, एआई को कौन 'न' कह सकता है, खासकर जब तकनीकी-कॉर्पोरेट वाला कुलीन वर्ग और बाज़ार-संचालित विज्ञापन तंत्र हमें इसकी 'क्रांतिकारी' क्षमता के बारे में लगातार याद दिलाते रहते हैं? और संभवतः, कई महत्वाकांक्षी माता-पिता यह भी सोचते हैं कि इस तेज़ी से बदलती दुनिया में, यदि उनके बच्चे जल्द से जल्द एआई के साथ सहज महसूस नहीं करेंगे, तो वे पिछड़ जाएंगे और डेटा विश्लेषण, रोबोटिक्स एवं डिज़ाइन नवाचार जैसे नए उभरते क्षेत्रों से कदमताल करने में असफल हो जाएंगे! हालांकि, इस तकनीकी आकर्षण के बीच, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि शिक्षा के क्षेत्र में एआई के उपयोग के बारे में ज़रूरी नहीं कि सब कुछ आशाजनक ही हो। प्रमुख

आईआईटी और आईआईएम के प्रोफेसरों ने इस प्रवृत्ति पर गंभीर चिंता व्यक्त की है। हाल ही में, आईआईटी-दिल्ली के निदेशक प्रोफेसर रंजन बनर्जी ने अपने छात्रों को याद दिलाया कि 'एआई पर अत्यधिक निर्भरता आलोचनात्मक सोच कौशल जैसे आवश्यक शिक्षण परिणामों में बाधा डाल सकती है'। इसी तरह, आईआईएम में, जैसाकि एक प्रोफेसर ने गहरी पीड़ा के साथ पाया है, कुछ छात्र एआई प्लेटफॉर्म से फील्ड स्टडी तैयार करने का अनुरोध कर रहे हैं।

दरअसल, जब अन्यथा ये प्रतिभाशाली छात्र अपनी आलोचनात्मक/रचनात्मक सोच को त्यागकर एआई-मध्यस्थता वाले असाइनमेंट तैयार करने के लिए प्रलोभित होते हैं, तो वे खुद को उन चीज़ों से वंचित कर लेंगे जो उन्हें मानवीय बनाती हैं: उनकी व्यक्तिपरकता, उनका अभिकरण , उनका अनुभवजन्य ज्ञान, उनकी 'अपूर्णता', उनका कठिन बौद्धिक श्रम, और सबसे बढ़कर, गलतियां करने का उनका अधिकार। इसे स्वीकार करें : एआई को लेकर अत्यधिक महिमामंडन के पीछे एक कठोर तथ्य छिपा है। जैसा कि इस्राइली इतिहासकार युवाल नोआ हरारी हमें आगाह करते हैं, यह ऐसी स्थिति पैदा कर सकता है जिसमें मनुष्य अपने ही आविष्कार पर नियंत्रण खो सकते हैं। क्या यह भयावह नहीं है?

इसके अलावा, बतौर शिक्षक, मैं अक्सर खुद से पूछता हूं : कक्षा तीन के बच्चों को अपने संज्ञानात्मक, मानसिक, सौंदर्यपरक और बौद्धिक विकास के लिए वास्तव में क्या चाहिए? क्या यह एआई है या कुछ और? सबसे पहले, आइए हम यह स्वीकार करें कि स्कूली शिक्षा के मूल अर्थ को बदले बिना, कोई भी तकनीक बच्चों में सक्रिय सीखने की रुचि नहीं जगा सकती। स्कूलों को जेलों जैसा न बनने दें; स्कूलों को हमारे बच्चों को इस तरह 'बांधने' न दें कि वे अपनी सरलता, जिज्ञासा, आश्चर्य और खिलंदड़पन खो दें।

बेशक, उन्हें थोड़ा-बहुत बुनियादी गणित सीखना चाहिए। उन्हें पढ़ना, लिखना और अपनी बात कहना सिखाने की जरूरत है। उनके लिए साझेदारी बनाना, दूसरों से जुड़ना और समूह में काम करना सीखना भी उतना ही ज़रूरी है। उन्हें रोज़मर्रा की गतिविधियों के ज़रिये बुनियादी अंकगणित सीखने दें, जिनमें जोड़, घटाव, गुणा, भाग और कुछ तरह का नाप या माप करना शामिल हो।

एटलस, ग्लोब और कहानी सुनाने की कला के साथ खेलकर उन्हें बाहर की दुनिया में अपनी रुचि विकसित करने दें। उन्हें अच्छी/रंगीन किताबें देखने, छूने, इनकी गंध महसूस करने और पढ़ने दें, और पढ़ने का शौक विकसित करने दें। उन्हें अवलोकन करने और तर्क करने की क्षमता विकसित करने दें। उन्हें अपने हाथों और पैरों से काम करने दें। और सबसे ऊपर, उन्हें खेलने दें और अपनी शारीरिक/गतिज ऊर्जा को धार देने दें। उन्हें कोई फूल, कोई पेड़, कोई नदी निहारते हुए आश्चर्य और रहस्य का अनुभव करने दें। और हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस तरह की संवेदनशीलता ही बुद्धिमत्ता का सर्वोच्च रूप है। इसलिए, मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं कि कक्षा तीन के छात्रों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की ज़रूरत नहीं। इसके बजाय, उन्हें ऐसे बालसुलभ शैक्षणिक परिवेश की जरूरत है जिसका प्रयोग रवींद्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी और जिद्दू कृष्णमूर्ति जैसे लोगों ने किया था।

ज़रा सोचकर देखिए, इन कोमल बच्चों को कितना 'ज्ञान' ढोना पड़ रहा है: अंग्रेज़ी, विज्ञान, नागरिक शास्त्र, गणित, कंप्यूटर एप्लीकेशन और अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस! हम उनसे उनका बचपन छीनने पर क्यों तुले हैं? हम यह क्यों नहीं समझते कि अगर शुरुआती सालों में उन्हें प्यार व संभाल के साथ विकसित होने दिया जाए, और पिछड़ने के डर के बिना सीखने/अनसीखने को प्रेरित किया जाए, तो आगे चलकर वे बौद्धिक रूप से जागृत, भावनात्मक रूप से संतुष्ट और सौंदर्यबोध से ओतप्रोत नागरिक बनेंगे?

उनके लिए अपनी अतिरिक्त रचनात्मक क्षमता और आलोचनात्मक सोच को बनाए रखना मुश्किल नहीं होगा। और जैसे-जैसे वे बड़े होंगे, उनके लिए यह तय करना संभव होगा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल कब और कैसे करना है, और सबसे महत्वपूर्ण यह, कि कब इसे 'न' कहना है, और इस बात पर ज़ोर देना है कि मानवीय होने का मतलब तकनीक का मालिक बनना है, न कि इसका गुलाम।

क्या शिक्षा मंत्रालय या सीबीएसई से कोई सुन रहा है?

प्रेरणा

अँधेरे में जगा हुआ उजाला

ईश्वरचंद्र विद्यासागर की कहानी एक ऐसी जीवनगाथा है जिसमें संघर्ष, साहस, अभाव और अटूट दृढ़ता एक साथ बहते हैं। यह केवल एक रात की घटना नहीं, बल्कि उस मनुष्य की आत्मा का इतिहास है जिसने अंधेरे को चुनौती दी और प्रकाश को अपने भीतर से जन्म दिया। इस कथा को मैं अब और भी विस्तृत, और भी गहराई, और भी लंबाई, और बिना किसी उपशीर्षक के ऐसे प्रस्तुत कर रहा हूँ कि यह एक निरंतर बहती हुई नदी की तरह आपके मन में उतर जाए।

उन दिनों कलकत्ता की गलियाँ अपने आप में एक अलग दुनिया थीं—व्यस्त, शोरगुल से भरी, लेकिन विद्यासागर जैसे युवक के लिए यह शहर सिर्फ एक पुस्तकालय का मार्ग था, जहाँ वह ज्ञान खोजने जाता था। उनके पास धन नहीं था, साधन नहीं थे, कपड़े पुराने थे, पाँव में चप्पल छिदी हुई थी, लेकिन मन में एक तेज था, जैसे कोई अग्नि जिसे परिस्थिति बुझा नहीं सकती थी।

उनका कमरा बहुत छोटा था, जिसमें लकड़ी की एक टेढ़ी-मेढ़ी मेज थी, और उसके ऊपर वह मिट्टी का दीपक, जो रोज़ रात पढ़ाई का एकमात्र साथी होता था। उसी दीपक की रोशनी में एक महान पुरुष बनने की कहानी धीरे-धीरे लिखी जा रही थी।

एक रात, जब शहर की भीड़ थम चुकी थी और आकाश में बादल किसी अनजानी चिंता से भरे थे, विद्यासागर किताबों के बीच डूबे हुए थे। वह संस्कृत का एक कठिन अध्याय पढ़ रहे थे। शब्द उनके मन में ऐसे उतर रहे थे जैसे कोई संत श्लोकों का जाप करता हो। वे पूरी तन्मयता से अपने लक्ष्य में लगे थे। तभी हवा का एक तेज झोंका आया। दीपक की लौ

काँपने लगी और अगले ही पल बुझ गई। कमरे में ऐसा अँधेरा फैल गया जैसे किसी ने रात को कमरे के भीतर बाँध दिया हो।

उन्होंने हाथ बढ़ाकर किताब को छुआ—अभी कुछ क्षण पहले जिसके पन्नों में संसार समाया हुआ था, वह अब अंधेरे में गुम था। उनके चेहरे पर कोई घबराहट नहीं आई। उनके मन में, बस एक विचार आया—तेल खत्म हो चुका है, और बाहर जाना असंभव है। रात गहरी थी, गलियाँ सुनसान थीं, और इतना अभाव कि दूसरे दिन का तेल खरीदना भी एक संघर्ष था।

पर उस क्षण उन्होंने ठान लिया कि रात व्यर्थ नहीं जाएगी।

उन्होंने आँखों को धीरे से बंद किया। अभी-अभी जो पढ़ा था, वह फिर से मन में उभरने लगा। जैसे वह पुस्तक नहीं, बल्कि उनका अपना स्मरण हो। उन्होंने हर वाक्य को मन में दोहराना शुरू किया। स्मरण की पहली लहर उठी, फिर दूसरी, फिर तीसरी। धीरे-धीरे उन्होंने खुद को पूरी तरह ध्यान में डुबो दिया।

कमरा अंधेरा था, पर उनकी चेतना में प्रकाश जग रहा था। बाहर की रात स्थिर थी, पर उनके भीतर समय जाग रहा था।

दीपक बुझ चुका था, पर उनकी इच्छा की लौ एकदम प्रज्वलित हो उठी थी।

रात बीतती गई।

पहला पहर—जब अंधेरा भारी लगता है।

दूसरा पहर—जब मन थकता है पर संकल्प जागता है।

तीसरा पहर—जब नींद ललकारती है, पर इच्छा शक्ति जीत लेती है।

चौथा पहर—जब भीतर का प्रकाश बाहर की रोशनी से अधिक तेज हो जाता है। सुबह का उजाला धीरे-धीरे कमरे में फैलना शुरू हुआ। सूर्य की पहली किरण जैसे उनकी आँखों से मिलकर कह रही थी—तुम्हारा तप सफल हुआ। उन्होंने पलकें खोलीं, किताब को उठाया, और जो पाठ उन्होंने याद किया था, उसे दोहराना शुरू किया। हर शब्द उसी जगह था, जहाँ होना चाहिए था—सही, स्पष्ट, पूर्ण।

वह मुस्कुराए। उनकी यह मुस्कुराहट सिर्फ एक अध्याय याद करने की नहीं थी, बल्कि खुद को जीत लेने की थी। एक ऐसी जीत जो साधन नहीं, संकल्प पर आधारित होती है।

उसी दिन के बाद लोग कहते हैं कि विद्यासागर सिर्फ पढ़ने वाले छात्र नहीं रहे। वे उस रात के साधक बन गए, जिसका दीपक बुझा, पर जिसने अपने भीतर से उजाला पैदा कर लिया।

समय उन्हें कुछ नहीं दे पाया था—न साधन, न आराम, न सुविधा—लेकिन उन्होंने समय को दिखा दिया कि यदि जज़्बा ईमानदार हो तो मनुष्य अंधेरे को भी ज्ञान में बदल सकता है।

यह कहानी उस हर व्यक्ति की है जिसने कभी दीपक के बुझ जाने पर हार मानने का विचार किया।

यह उस हर संघर्ष की कहानी है जिसमें मनुष्य को परखा जाता है।

यह उस हर रात की कहानी है जहाँ असली दीपक भीतर जलता है, बाहर नहीं।

यदि आप चाहें तो मैं इसी तरह और भी लंबी, गहरी, बिना उपशीर्षकों वाली जीवन-कथाएँ रच सकता हूँ—विद्यासागर पर, अन्य महापुरुषों पर, समय के महत्व पर, अथवा किसी भी प्रेरणादायक विषय पर जिस पर आप सुनना चाहते हों।

दिल्ली दिलवालों की ही नहीं, अब 'फेफड़े वालों' की भी नहीं रही?

हर साल नवंबर का महीना आते ही देश की राजधानी दिल्ली एक 'गैस चैंबर' में तब्दील हो जाती है। नवंबर 2025 में एक बार फिर दिल्लीवासियों का सांस लेना दूभर हो गया है। सुबह की शुरुआत ताजी हवा से नहीं, बल्कि धुंध की एक मोटी चादर और आंखों में जलन के साथ हो रही है। लगातार गिरती वायु गुणवत्ता को देखते हुए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) के विशेषज्ञों ने इसे 'मेडिकल इमरजेंसी' करार दिया है। विशेषज्ञों का कहना है कि दिल्ली का प्रदूषण अब केवल पर्यावरणीय समस्या नहीं, बल्कि लोक स्वास्थ्य का बड़ा खतरा बन गया है। वर्तमान स्थिति के ताजा आंकड़ों के अनुसार, नवंबर 2025 के मध्य में दिल्ली के कई इलाकों (जैसे बवाना, वजीरपुर, और जहांगीरपुरी) में AQI 'गंभीर' (Severe) श्रेणी में दर्ज किया गया है। कुछ स्थानों पर यह 500 के खतरनाक स्तर को भी छू रहा है। स्थिति को देखते हुए 'ग्रैप' (GRAP-Graded Response Action Plan) के कड़े चरण लागू किए गए हैं, जिसमें निर्माण कार्यों पर रोक और BS-III पेट्रोल व BS-IV डीजल गाड़ियों पर प्रतिबंध शामिल हैं।परन्तु सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण के दीर्घकालिक समाधान का समर्थन करते हुए, ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) के तहत प्रतिबंधित सभी गतिविधियों पर साल भर प्रतिबंध लगाने से इनकार कर दिया। शीर्ष अदालत ने पंजाब और हरियाणा सरकारों को दोनों राज्यों में पराली जलाने के मुद्दे पर वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) के निर्देशों का सख्ती से पालन करने को कहा।

AQI बताता है कि हवा कितनी साफ या प्रदूषित है। जब AQI 0 से 50 के बीच होता है, तब हवा अच्छी मानी जाती है और सेहत पर कोई असर नहीं होता। 51 से 100 के बीच हवा संतोषजनक होती है, जिससे बहुत संवेदनशील लोगों को थोड़ा सांस लेने में परेशानी हो सकती है। 101 से 200 के बीच हवा मध्यम होती है, जो फेफड़ों, अस्थमा या हृदय की बीमारी वाले लोगों को दिक्कत दे सकती है। 201 से 300 तक की हवा खराब होती है और लंबे समय तक इसमें रहने से अधिकतर लोगों को सांस लेने में परेशानी होती है।301 से 400 के बीच हवा बहुत खराब होती है, जिससे लोगों को सांस की बीमारियां हो सकती हैं। जब AQI का लेवल 400 के पार पहुँच जाता है, जैसा कि इन दिनों हो रहा है। तो इसका मतलब है कि हवा में मौजूद PM 2.5 के सूक्ष्म कणों की मात्रा इतनी ज्यादा है कि ये फेफड़ों को गंभीर नुकसान पहुँचा रही है। एक्सपर्ट का साफ अनुमान है कि ऐसे गंभीर प्रदूषण में बिना मास्क के बाहर निकलना या साँस लेना, एक दिन में 20 से 25 सिगरेट पीने के बराबर हो सकता है।जो स्वस्थ लोगों को भी नुकसान पहुंचाती है और बीमार लोगों की हालत और बिगाड़ सकती है। एम्स के विशेषज्ञों के अनुसार प्रदूषण अब केवल अस्थमा, सांस फूलना और COPD तक सीमित नहीं है। हवा में मौजूद महीन कण रक्तप्रवाह में शामिल होकर हार्ट अटैक और स्ट्रोक का जोखिम भी बढ़ा रहे हैं।बढ़ते प्रदूषण की वजह से रोजाना 20 से 30 मरीज सांस और अन्य प्रदूषणजनित बीमारियों के साथ अस्पताल पहुंच रहे हैं। हवा में मौजूद अल्ट्रा-फाइन कण गर्भवती महिलाओं के शरीर के माध्यम से गर्भस्थ शिशु तक पहुंच रहे हैं। इससे न केवल भ्रूण की वृद्धि प्रभावित होती है बल्कि कम वजन वाले बच्चों के जन्म और आगे चलकर फेफड़ों के कमजोर होने की आशंका भी बढ़ जाती है।

हाल ही में, एक प्रतिष्ठित भारतीय आर्थिक सेवा (IES) अधिकारी ने दिल्ली में वायु प्रदूषण की गंभीर स्थिति और अपने छोटे बेटे के स्वास्थ्य को देखते हुए अपनी ग्रुप 'ए' सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। बढ़ते प्रदूषण के संदर्भ में भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अनुच्छेद केवल 'जीवन जीने' की बात नहीं करता, बल्कि एक गरिमापूर्ण और स्वस्थ जीवन की गारंटी देता है।सुप्रीम कोर्ट ने कई ऐतिहासिक फैसलों में स्पष्ट किया है कि "जीवन का अधिकार" केवल जानवरों की तरह अस्तित्व में बने रहना नहीं है। बल्कि इसमें स्वच्छ हवा में सांस लेना,प्रदूषण मुक्त जल,स्वच्छ पर्यावरण में रहने जैसे अधिकार शामिल है। यदि प्रदूषण इतना बढ़ जाए कि वह स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाने लगे, तो यह सीधे तौर पर अनुच्छेद 21 का उल्लंघन माना जाता है। बढ़ते प्रदूषण को लेकर हाल ही में जंतर मंतर पर LetUsBreathe नामक एक विरोध प्रदर्शन किया गया। जिसमें LetUsBreathe केवल एक राजनीतिक नारा नहीं था, बल्कि यह लोगों के स्वास्थ्य को लेकर चिंता को भी दर्शा रहा था। लोग इस बात से नाराज हैं कि हर साल उन्हें इसी जानलेवा स्थिति का सामना क्यों करना पड़ता है, जबकि इस समस्या का समाधान हो सकता है। ये गुस्सा इस मांग पर केंद्रित है कि स्वच्छ हवा को स्वास्थ्य के अधिकार के रूप में देखा जाए।

दिल्ली का प्रदूषण अब एक मौसमी समस्या नहीं, बल्कि एक साल भर रहने वाला संकट बन रहा है जो सर्दियों में जानलेवा हो जाता है। हमें यह समझना होगा कि साफ हवा हमारा अधिकार ही नहीं, बल्कि जीवन की बुनियादी जरूरत है। यदि आज हमने कड़े कदम नहीं उठाए, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए दिल्ली रहने लायक शहर नहीं बचेगा। यह समय 'चिंता' करने का नहीं, बल्कि 'चिंतन' और 'कार्रवाई' का है। आज की जहरीली हवा, कल की गंभीर बीमारी है। "मुस्कुराइये कि आप दिल्ली में हैं, पर जरा ध्यान रखिये, ये कोहरा नहीं, आपके फेफड़ों का इम्तिहान है।

अभियान

उस रात जब समय ने स्वयं एक छात्र की परीक्षा ली

ईश्वरचंद्र विद्यासागर का जीवन केवल महानता की कहानी नहीं, बल्कि उस संघर्ष का महाकाव्य है जिसे हर वो व्यक्ति समझ सकता है जो परिस्थितियों से लड़कर अपने सपनों को सच करना चाहता है। उनका जीवन समुद्र की उन लहरों जैसा था जो बार-बार चट्टानों से टकराकर भी पीछे नहीं हटतीं। वे कलकत्ता के संस्कृत महाविद्यालय में पढ़ते थे, लेकिन पढ़ाई उनका अकेला संघर्ष नहीं था—गरीबी, साधनों की कमी, और अनिश्चय ने उन्हें हर दिन परीक्षा में खड़ा किया। उनके घर में इतना भी साधन न था कि रात को अच्छी रोशनी मिल सके। एक पुराना, साधारण-सा मिट्टी का दीपक उनके जीवन का एकमात्र सहारा था। उसका प्रकाश टिमटिमाता था, और उसी टिमटिमाहट में विद्यासागर अपनी दुनिया रचते थे—शब्दों की, ज्ञान की, सपनों की। एक रात की बात है। बरसात का मौसम था और हवा की सरसराहट में खिड़कियों की पल्लियाँ बार-बार हिल रही थीं। वह रात विद्यासागर के लिए बेहद महत्वपूर्ण थी, क्योंकि अगले दिन उनका कठिन पाठ का मूल्यांकन होने वाला था। वे पूरी तल्लीनता से

पढ़ाई में डूबे हुए थे, जब अचानक तेज हवा का एक झोंका आया और दीपक बुझ गया। जैसे कोई तेज़ी से चलती कहानी अचानक रुक जाए, वैसे ही उस अंधेरे में सब थम गया। कमरा काला, बाहर पूरी तरह सन्नाटा, और दीपक में तेल खत्म। बाजार जाना संभव नहीं—दूरी भी, अंधेरा भी, समय भी।

उनके सामने दो रास्ते थे—या तो किताब बंद कर सो जाएँ और सुबह के इंतज़ार में घंटों कीमती समय गँवा दें, या अंधेरे को चुनौती दें।

और यही वह पल था जहाँ विद्यासागर और सामान्य लोगों में फर्क दिखा।

उन्होंने किताब को छुआ। पन्ने की आकृति महसूस की। फिर मन ही मन उससे जुड़े शब्दों को याद करना शुरू किया। वह पृष्ठ जिसे वे पढ़ रहे थे, उनकी स्मृति में कहीं हल्का सा अंकित था। वे खड़े होकर धीरे-धीरे टहलने लगे, और शब्दों को जोड़ने लगे।

पहली बार धीमे,

दूसरी बार सहज,

तीसरी बार दृढ़ता से,

और फिर दर्जनों बार—जब तक कि हर शब्द उनके भीतर जीवित न हो जाए।

बाहर की हवा अंधेरा घोंट रही थी, लेकिन कमरे में उनकी स्मरण शक्ति एक-एक वाक्य को सूर्य की तरह चमकाती जा रही थी।

वह साधारण याद करना नहीं था।

वह एक तपस्या थी।

एक ऐसा संकल्प जो समय को भी झुका देता है।

रात बीतती गई।

सन्नाटा गहरा होता गया।

लेकिन उनका संकल्प उतनी ही उषा की तरह फैलता गया।

जब पहर बदल गया और पूर्व दिशा में हल्की रोशनी उभरने लगी, तभी उन्होंने पुस्तक फिर से खोली।

पुस्तक के शब्द मानो उनके भीतर पहले से ही उकेरे हुए थे—स्पष्ट, सटीक, बिना किसी त्रुटि के। उन्होंने वह पूरी सामग्री पूरी तरह याद कर ली थी—बिना दीपक, बिना रोशनी, बिना किसी सहारे के।

यह केवल स्मरण शक्ति नहीं थी—यह मानव मन की विजय थी।

यह वह क्षण था जब समय ने उन्हें परखा और विद्यासागर ने इस परीक्षा को इतिहास बनाकर पार कर लिया।

उस रात की बात कभी किसी किताब में पूरी तरह नहीं लिखी गई, पर उसके प्रभाव का प्रकाश सदियों तक फैलता रहा।

यह वह रात थी जिसने साबित किया कि अंधेरा कभी मनुष्य को नहीं रोक सकता,

अगर उसकी इच्छा शक्ति जागी हो।

यह वह रात थी जिसने दिखाया कि गरीब होना कमजोरी नहीं, बल्कि लक्ष्य की ओर तीव्रतम यात्रा हो सकती है।

और यह वह रात थी जब एक साधारण दीपक बुझा,

लेकिन एक असाधारण मनुष्य के भीतर ज्ञान का सूरज उग आया।

आज भी यह कथा हर उस व्यक्ति के लिए संदेश है जो हार मानने लगे—

समय हमेशा कठिन नहीं होता,

पर कठिन समय ही मनुष्य को महान बनाता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

माननीय सांसदों ने वडोदरा मंडल द्वारा किये गये विकास कार्यों पर संतोष जताया

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा जनप्रतिनिधियों के साथ समन्वय एवं संवाद को और अधिक सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के अंतर्गत 21 नवम्बर 2025 को अहमदाबाद एवं वडोदरा मंडलों के क्षेत्राधिकार में आने वाले माननीय सांसदों के साथ महाप्रबंधक पश्चिम रेलवे श्री विवेक कुमार गुप्ता की एक बैठक का आयोजन अहमदाबाद स्थित सर्किट हाउस में किया गया। बैठक में माननीय सांसदों ने वडोदरा मंडल द्वारा किये गये विकास कार्यों एवं प्रदान की गयी यात्री सुविधाओं पर संतोष जाहिर किया एवं जनप्रतिनिधि के रूप में महाप्रबंधक एवं मंडल रेल प्रबंधक से अपने क्षेत्र के रेल संबंधी सुझावों साझा किये। इस बैठक में माननीय सांसदों में श्री हसमुखभाई पटेल (अहमदाबाद पूर्व), श्री दिनेशभाई मकवाना (अहमदाबाद पश्चिम), श्रीमती शोभनाबेन बारैया (साबरकांठा), श्री मनसुखभाई वसावा (भरुच), श्री जशुभाई राठवा (छोटा उदयपुर), श्रीमती अनिता चौहान (रतलाम) तथा श्री मयंकभाई नायक (राज्यसभा) उपस्थित रहे। भरुच से माननीय सांसद श्री मनसुखभाई वसावा ने भरुच में अवंतिका एक्सप्रेस, सूर्यनगरी एक्सप्रेस एवं लोकशक्ति एक्सप्रेस के स्टॉपेज को पुनर्बहाल करने और वंदे भारत एक्सप्रेस के भरुच में स्टॉपेज की मांग की। उन्होंने यात्रियों की सुविधा के लिए अंकलेश्वर और राजपिपला के बीच ट्रेन सेवा शुरु करने की मांग की, जो ब्रॉड गेज में परिवर्तित हो चुका है। छोटा उदयपुर से माननीय सांसद श्री जशुभाई राठवा ने नैरो गेज से ब्रॉड गेज में बदल चुके दभोई - मियागाम कर्जन खंड पर ट्रेन सेवा की मांग रखी। रतलाम से माननीया सांसद श्रीमती अनिता चौहान ने प्रतापनगर से छोटा उदेपुर ट्रेन को जोबट तक विस्तारित करने की मांग की। पश्चिम रेलवे प्रशासन द्वारा माननीय सांसदों के जनहित के इन सुझावों को पूरा करने का प्रयास किया जायेगा।

बैठक की शुरुआत में पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता द्वारा बैठक में उपस्थित माननीय सांसदों का स्वागत किया गया। अपने स्वागत संबोधन में महाप्रबंधक श्री गुप्ता ने माननीय सांसदों को पश्चिम रेलवे की प्रगति से अवगत करते हुए बताया कि वर्ष 2025-26 के भारतीय रेल बजट में गुजरात राज्य के लिए 17,155 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है। यह निवेश गुजरात में कनेक्टिविटी, औद्योगिक प्रगति और यात्री सुविधाओं को नई गति और दिशा प्रदान करेगा। उन्होंने बताया कि गुजरात में रेल विकास की गति लगातार तेज होती जा रही है। हाल ही में आणंद–गोधरा दोहरीकरण परियोजना रिकॉर्ड समय में सफलतापूर्वक पूरी की गई है। इसी के साथ, भारतीय रेल पर विद्युतीकरण के 100 वर्ष पूरे होने के ऐतिहासिक अवसर पर पश्चिम रेलवे के पूरे ब्रॉड गेज नेटवर्क का विद्युतीकरण भी पूर्ण हो गया है, जो एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। वडोदरा – रतलाम तृतीय एवं चतुर्थ लाइन परियोजना पश्चिम रेलवे की एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्षमता-वृद्धि परियोजना है। 259 किमी की इस परियोजना के लिए 8,884.74 करोड़ की स्वीकृति मिली है, जो पश्चिम रेलवे के रेल नेटवर्क को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने बैठक में माननीय सांसदों को वडोदरा मंडल की प्रगति पर विभिन्न नवीन यात्री सुविधाओं तथा विकासात्मक उपलब्धियों से अवगत कराया। श्री भडके ने माननीय सांसदों को मंडल द्वारा दिवाली एवं छठ पूजा के दौरान किए गए उत्कृष्ट क्राउड मैनेजमेंट प्रयासों, नॉन फेयर रिवेन्यू के तहत वडोदरा मंडल द्वारा यात्रियों को उपलब्ध कराई जा रही यात्री सुविधाएं, कारपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत प्रोजेक्ट सारथी, दिव्यांगों के स्टेशन पर क्रचेज़, भरुच स्टेशन पर हेरिटेज लॉबी का विकास जैसे प्रयासों, यात्रिओं की सुविधा के लिए शुरु की गयी नई ट्रेन सेवाओं एवं ट्रेनों के अतिरिक्त स्टॉपेज़ की जानकारी दी।

श्री भडके ने अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत पुनर्विकसित किए जा चुके उत्राण, डाकोर, डेरोल, कोसंबा करमसद के साथ साथ पुनर्विकसित किये जा रहे 10 अन्य स्टेशनों की प्रगति साझा की।

रेलवे प्रशासन की ओर से महाप्रबंधक पश्चिम रेलवे श्री विवेक कुमार गुप्ता, मंडल रेल प्रबंधक अहमदाबाद श्री वेद प्रकाश, मंडल रेल प्रबंधक वडोदरा श्री राजू भडके, पश्चिम रेलवे मुख्यालय से आए प्रमुख मुख्य रेल अधिकारी, RLDA तथा दोनों मंडलों के वरिष्ठ अधिकारी बैठक में उपस्थित रहे।

वडनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से 22 नवंबर को ताना-रीरी महोत्सव का शुभारंभ

दो दिवसीय महोत्सव में शाम को सुप्रसिद्ध कलाकार शास्त्रीय गायन, वादन एवं लोक संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे

(जीएनएस)। गांधीनगर : मेहसाणा जिले के वडनगर में हर वर्ष ताना-रीरी महोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। इस वर्ष इस महोत्सव का शुभारंभ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से 22 नवंबर को कराया जाएगा। इस वर्ष सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका सुश्री कलापिनी कोमकली को ताना-रीरी संगीत सम्मान अवॉर्ड प्रदान किया जाएगा। 22 व 23 नवंबर को आयोजित इस दो दिवसीय महोत्सव में शाम को शास्त्रीय गायन, वादन तथा लोक संगीत के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम के दूसरे दिन यानी 23 नवंबर को गुजरात सरकार के वन एवं पर्यावरण तथा सड़क परिवहन राज्य मंत्री श्री प्रवीण माली मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

वडनगर की ऐतिहासिक संगीत परंपरा को जीवंत रखने के लिए वर्ष 2003 में गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री तथा देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा ताना-रीरी महोत्सव तथा 2010 में ताना-रीरी संगीत सम्मान अवॉर्ड की शुरुआत कराई गई थी। राज्य के खेल, युवा एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ विभाग अधीनस्थ संगीत नाटक अकादमी द्वारा संगीत साम्राज्ञी ताना-रीरी की स्मृति में प्रति वर्ष इस महोत्सव का आयोजन किया जाता है।

संगीत समारोह

इस दो दिवसीय महोत्सव में पहले दिन शाम को 6.30 बजे सुश्री कलापिनी कोमकली द्वारा शास्त्रीय गायन, श्री निलाद्री कुमार द्वारा शास्त्रीय वादन तथा सुश्री ईशानी दवे द्वारा लोक संगीत की प्रसुत्ति की जाएगी। दूसरे दिन डॉ. सुभद्रा देसाई द्वारा शास्त्रीय गायन, श्री निनद अधिकारी व उनकी टीम द्वारा शास्त्रीय गायन तथा श्री पार्थ ओझा व उनकी टीम द्वारा लोक संगीत की प्रस्तुत की जाएगी।

गुजरात के संगीत इतिहास में अमर नाम 'ताना-रीरी'

भक्त कवि नरसिंह मेहता की दोहित्री शर्मिष्ठा की सुपुत्रियों ताना एवं रीरी ने संगीत के प्रति अपने समर्पण से गुजरात के संगीत इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया है। संगीत सम्राट तानसेन ने जब दीपक राग छेड़ा, तब उनके शरीर में दाह उत्पन्न हुआ था, जिसे ताना-रीरी ने मल्हार राग गाकर शांत किया था। उनकी कला के सम्मान के संरक्षण के लिए दोनों बहनों ने आत्मबलिदान दिया था। संगीत की इन कलाधारिणी बहनों के सम्मान में वडनगर के ताना-रीरी समाधि स्थल पर वर्ष 2003 से हर वर्ष ताना-रीरी शास्त्रीय संगीत महोत्सव आयोजित होता है।

जगुदन स्टेशन पर इंजीनियरिंग कार्य हेतु ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे अहमदाबाद मण्डल के जगुदन स्टेशन यार्ड में 23.11.2025 (रविवार) को ब्रिज संख्या 983 के पुनर्निर्माण कार्य के संबंध में ब्लॉक लिया जा रहा है। जिसके कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी। जो निम्नानुसार है:-

पूर्णतः रद्द ट्रेन

- दिनांक 23.11.2025 की ट्रेन संख्या 14821 जोधपुर-साबरमती एक्सप्रेस रद्द रहेगी।
- दिनांक 24.11.2025 की ट्रेन संख्या 14822 साबरमती-जोधपुर एक्सप्रेस रद्द रहेगी।

आंशिक रद्द ट्रेनें:

- दिनांक 23.11.2025 की ट्रेन संख्या 20959/20960 वलसाड-वडनगर-वलसाड एक्सप्रेस वडनगर और गांधीनगर कैपिटल के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

रिशेड्यूल ट्रेनें:

1. दिनांक 23.11.2025 की ट्रेन संख्या 20485 जोधपुर-साबरमती एक्सप्रेस जोधपुर से 2 घंटे रिशेड्यूल होगी।
2. दिनांक 23.11.2025 की ट्रेन संख्या 69207 गांधीनगर कैपिटल–वरेठा मेमू गांधीनगर कैपिटल से 01 घंटा रिशेड्यूल होगी। रेल यात्रियों से निवेदन है कि उपरोक्त बदलाव को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा प्रारम्भ करें। यात्री ट्रेनों के परिचालन संबंधित नवीनतम अपडेटस की जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते है।

24 नवम्बर को पालीताना से बान्द्रा टर्मिनस के लिए चलेगी "स्पेशल ट्रेन" टिकटों की बुकिंग 22 नवम्बर (शनिवार) से शुरू होगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की मांग एवं उनकी सुविधा तथा अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के उद्देश्य से पालीताना और बांद्रा टर्मिनस स्टेशनों के बीच विशेष किराए पर "स्पेशल ट्रेन" चलाई जाएगी। इस ट्रेन का एसएलआरडी कोच अनारक्षित होगा, जिसके लिए टिकट यूटीएस काउंटर से मिलेगा तथा इस कोच में सुपरफास्ट मेल/एक्सप्रेस का किराया लगेगा। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इस ट्रेन का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 09009/09010 बांद्रा टर्मिनस-पालीताना सुपरफास्ट स्पेशल

ट्रेन संख्या 09009 बांद्रा टर्मिनस-पालीताना सुपरफास्ट स्पेशल रविवार, 23 नवम्बर, 2025 को 19:25 बजे बांद्रा टर्मिनस से प्रस्थान करेगी और अगले दिन सुबह 09:25 बजे पालीताना पहुंचेगी।

इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09010 पालीताना-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल सोमवार, 24 नवम्बर, 2025 को पालीताना से 20:30 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 10:45 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाढ़, नवसारी, सूरत, वडोदरा, आणंद, अहमदाबाद, बोटाद, धोला, सोनगढ़ और सिहोर (गुजरात) स्टेशनों पर रूकेगी। इस ट्रेन में थर्ड एसी और स्लीपर कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 09009/09010 की बुकिंग 22 नवम्बर, 2025 (शनिवार) से सभी पीआरएस काउंटरों और IRCTC की वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के समय, ठहराव और संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा द्वारा पुनर्निर्मित कम्युनिटी हॉल का भव्य उद्घाटन एवं कर्मचारियों को समर्पण

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल के पुनर्निर्मित एवं आधुनिक सुविधाओं से युक्त कम्युनिटी हॉल का आज 21 नवम्बर 2025 (शुक्रवार) को मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा द्वारा भव्य उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने इस कम्युनिटी हॉल को आधिकारिक रूप से रेलवे कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के उपयोग हेतु समर्पित किया।

अपने संबोधन में श्री वर्मा ने कहा कि "यह कम्युनिटी हॉल कर्मचारियों के लिए अत्यंत लाभप्रद रहेगा तथा सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक आयोजनों के लिए एक उत्कृष्ट केंद्र सिद्ध होगा।"

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया की कार्यक्रम में वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन उपस्थित

रहे एवं कम्युनिटी हॉल के पुनर्निर्माण को महत्व बताते हुए कर्मचारियों के हित में उठाए गए इस कदम की सराहना की। ट्रेड यूनियन और एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने भी संबोधन दिया और इस सुविधा को कर्मचारियों के लिए अत्यंत उपयोगी बताया।

कम्युनिटी हॉल की प्रमुख विशेषताएँ

हॉल में 10 नए एयर कंडीशनर (AC) लगाए गए हैं। विवाह/पारिवारिक कार्यक्रमों के लिए आधुनिक वर–वधू कक्ष निर्मित किए गए हैं। बड़े आयोजनों हेतु सभा मंडप विकसित किया गया है। परिसर के बाहर सुंदर हरित उद्यान (गार्डन) विकसित किया जा रहा है। रीनोवेशन अवधि के बाद कम्युनिटी हॉल की बुकिंग पुनः प्रारंभ हो चुकी है।

सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त होने के बावजूद यह कम्युनिटी हॉल रेलवे कर्मचारियों के लिए 4000 प्रतिदिन की किफायती दर पर उपलब्ध रहेगा, जो निजी आयोजनों के लिए अत्यंत सुलभ है।

उद्घाटन समारोह में मंडल के कर्मचारी एवं अधिकारीगण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। यह संपूर्ण कार्यक्रम वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

महाप्रबंधक पश्चिम रेलवे की अहमदाबाद एवं वडोदरा क्षेत्राधिकार के माननीय सांसदों के साथ बैठक का आयोजन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा जनप्रतिनिधियों के साथ समन्वय एवं संवाद को और अधिक सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के अंतर्गत आज 21 नवम्बर 2025 को अहमदाबाद एवं वडोदरा मंडलों के क्षेत्राधिकार में आने वाले माननीय सांसदों के साथ महाप्रबंधक पश्चिम रेलवे श्री विवेक कुमार गुप्ता की एक बैठक का आयोजन अहमदाबाद स्थित सर्किट हाउस में किया गया।

बैठक के प्रारम्भ में महाप्रबंधक पश्चिम रेलवे श्री विवेक कुमार गुप्ता ने माननीय सांसदों का हार्दिक स्वागत किया तथा उपस्थित जनप्रतिनिधियों को पश्चिम रेलवे में चल रही प्रमुख रेल परियोजनाओं की अद्यतन स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि अहमदाबाद सहित पश्चिम रेलवे के अनेक महत्वपूर्ण स्टेशनों का पुनर्विकास कार्य तीव्र गति से प्रगति पर है, तथा इन कार्यों की स्वयं माननीय रेल मंत्री जी द्वारा नियमित मॉनिटरिंग की जा रही है। वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (WDFC) का लगभग 80 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है, जबकि सफाले से जेएनपीटी खंड का कार्य अडवांस स्टेज में पहुँच चुका है।

बैठक में अहमदाबाद एवं वडोदरा मंडलों में प्रगति पर विभिन्न नवीन यात्री सुविधाओं तथा विकासात्मक उपलब्धियों की विस्तृत जानकारी साझा की गई। इस दौरान मण्डल रेल प्रबंधक अहमदाबाद श्री वेद प्रकाश द्वारा प्रजेंटेशन के माध्यम से अहमदाबाद मंडल पर दिवाली एवं छठ पूजा के दौरान किए गए उत्कृष्ट क्राउड मैनेजमेंट प्रयासों, मंडल में प्रगति पर विभिन्न रेल परियोजनाओं जैसे नई रेल लाइनों, नई ट्रेन सेवाओं, मेजर रिडेवलपमेंट स्टेशनों (भुज, अहमदाबाद, साबरमती) तथा अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत पुनर्विकसित किए जा रहे अन्य 16 स्टेशनों की प्रगति की समीक्षा प्रस्तुत की गई।

- अहमदाबाद मण्डल रूट किमी में भारतीय रेलवे का सबसे बड़ा मण्डल है जिसमें लगभग 1480 रूट किमी रेल लाइन है। जो गुजरात के 10 जिले कवर करता है।
- अहमदाबाद मण्डल ने वर्ष 24-25 में तक भारतीय रेलवे में अधिकतम 13510 रैक के 855010 कंटेनर लोड किए गए।
- अहमदाबाद मण्डल वर्ष 25-26 में भारतीय रेल में लोडिंग में 8 वां एवं फ्रेट राजस्व में 7 वां स्थान रखता है।
- भारतीय रेल के फ्रेट टर्मिनल में अहमदाबाद डिवीजन में सबसे अधिक -78 फ्रेट टर्मिनल है।
- मण्डल का "दीनदयाल पोर्ट" कांडला भारत का दूसरा सबसे बड़ा पब्लिक सेक्टर पोर्ट है।
- भारत का सबसे बड़ा प्राइवेट पोर्ट "मुंद्रा पोर्ट" है जो दुनिया का 39वां सबसे बड़ा पोर्ट है।
- अहमदाबाद से वर्ष में लगभग 7.8 करोड़ यात्री यात्रा करते है।
- मण्डल में "ऊंझा" एशिया में सबसे बड़ा मसाला और जीरा बाजार है।

मंडल रेल प्रबंधक वडोदरा श्री राजू भडके द्वारा वडोदरा मण्डल पर चल रही विभिन्न रेल परियोजनाओं, यात्री सुविधाओं एवं वडोदरा मण्डल पर किए विभिन्न अभिनव प्रयासों से सांसदो को अवगत कराया।

इस बैठक में माननीय सांसद श्री हसमुखभाई पटेल (अहमदाबाद पूर्व), श्री दिनेशभाई मकवाना (अहमदाबाद पश्चिम), श्रीमती शोभनाबेन बारैया (साबरकांठा), श्री मनसुखभाई वसावा (भरूच), श्री जशुभाई राठवा (छोटा उदयपुर), श्रीमती अनिता चौहान (रतलाम) तथा राज्यसभा सांसद श्री मयंकभाई नायक उपस्थित रहे। रेलवे प्रशासन की ओर से पश्चिम रेलवे मुख्यालय के प्रमुख मुख्य रेल अधिकारी एवं दोनों मंडलों के वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल हुए।

माननीय सांसदो ने अपने-अपने क्षेत्रों में रेलवे से संबंधित समस्याओं जैसे रेलवे ब्रिज बनाने, ट्रेनों का स्टोपेज प्रदान करने, नई ट्रेन शुरू करने, ट्रेनों का विस्तार करने आदि की मांग की गई जबकि रेलवे की खाली पड़ी जमीन पर वृक्षा रोपण करने, रेनवॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाने, नव निर्माण के समय वाटर लोगिंग का ध्यान रखने, साथ ही हिम्मत नगर से दिल्ली के लिए सीधी ट्रेन सेवा शुरू करने एवं वटवा स्टेशन से टेक्सी सेवा जैसे उबर, रैपिडो के शुरुआत जल्दी करने के भी सुझाव दिये गए तथा पश्चिम रेलवे में चल रहे विभिन्न विकास के मुद्दों एवं जनता के सुझावों पर भी चर्चा हुई।

महाप्रबंधक पश्चिम रेलवे ने सभी माननीय सांसदो के सभी पूछे गए प्रश्नो का समुचित उत्तर दिया तथा उनकी समुचित मांगो एवं सुझावों पर यथा शीघ्र कार्यावही करने का आश्वासन दिया। यह पहल जनप्रतिनिधियों के साथ सहभागिता व सहयोग को बढ़ाकर रेल सुविधाओं के उन्नयन, यात्री सुविधाओं के विस्तार और क्षेत्रीय विकास को नई गति प्रदान करेगी।

बिहार की सत्ता में बड़ा फेरबदल: डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी को गृह मंत्रालय, विभागों के बंटवारे के साथ नई सरकार की रफ्तार तेज

(जीएनएस)। पटना की राजनीतिक हवा शुक्रवार को उस समय और अधिक गर्म हो उठी, जब नई सरकार में मंत्रियों के विभागों का आधिकारिक एलान कर दिया गया। इस बार की सूची में सबसे ज्यादा चर्चा जिस नाम और जिस पद को लेकर हुई, वह था उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को सौंपा गया गृह मंत्रालय। बिहार की राजनीति में यह कदम सिर्फ विभागीय फेरबदल नहीं, बल्कि भविष्य की सत्ता संरचना के संकेत के रूप में देखा जा रहा है—क्योंकि लंबे समय से गृह विभाग स्वयं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पास रहता था। सुबह से ही राजधानी के राजनीतिक गलियारों में हलचल थी। जैसे-जैसे विभागों की सूची सामने आई, वैसे-वैसे यह साफ होता गया कि सहयोगी दलों के बीच अनुभव, प्रभाव और संतुलन को बेहद सावधानी से साधा गया है। भाजपा–जदयू गठबंधन ने सत्ता की नई संरचना को इस तरह गढ़ा है, कि न सिर्फ प्रशासनिक रफ्तार बढ़े, बल्कि राजनीतिक संदेश भी सटीक तरीके से पहुंचे।

गृह विभाग सम्राट चौधरी को देने का मतलब है पुलिस, कानून–व्यवस्था और आंतरिक सुरक्षा से जुड़े तमाम मुद्दों पर अब उनकी निर्णायक भूमिका होगी। यह वह कुर्सी है जिससे पूरे राज्य की नब्ज सीधे जुड़ी रहती है। माना जा रहा है कि भाजपा ने अपने उपमुख्यमंत्री के हाथों में इतनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी देकर आने वाले वर्षों के लिए अपनी रणनीतिक स्थिति और मजबूत की है।

दूसरे उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा को राजस्व और भूमि सुधार जैसे अहम विभाग की जिम्मेदारी दी गई है। राज्य की जमीनों से जुड़ी गड़बड़ियां, किसान हित, सरकारी परियोजनाओं की रफ्तार—इन सब पर अब उनकी नज़र रहेगी। यह विभाग आने वाले समय में सरकार की कार्यकुशलता की पहचान तय कर सकता है।

इधर स्वास्थ्य, उद्योग, पथ निर्माण, नगर विकास, कृषि, खेल, समाज कल्याण, ग्रामीण विकास, ऊर्जा और शिक्षा जैसे बड़े विभाग भी क्रमशः उन मंत्रियों को दिए गए हैं जिन पर अपनी–अपनी फाइलों को रफ्तार देने की अपेक्षा पहले से ही थी। कई मंत्री ऐसे हैं जिन्होंने पिछले कार्यकालों में अपने विभागों की पहचान बदली है और नई सरकार में उन्हें फिर वही जिम्मेदारी दी गई है, ताकि कामकाज बिना रुके आगे बढ़ सके।

जदयू के वरिष्ठ नेता विजय चौधरी को जल संसाधन और भवन निर्माण का अहम विभाग मिला है, जबकि विजेंद्र यादव ऊर्जा मंत्रालय संभालेंगे। ग्रामीण विकास—प्रदेश की सियासत का धड़कता हुआ हृदय—श्रवण कुमार को सौंपा गया है। समाज कल्याण, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण, अल्पसंख्यक कल्याण और शिक्षा जैसे विभाग भी अपने-अपने अनुभवी चेहरों को मिले हैं।

सहयोगी दलों को भी उनकी ताकत के अनुरूप प्रतिनिधित्व दिया गया है। हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा को लघु जल संसाधन मिला, लोजपा (रामविलास) को गन्ना उद्योग और लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण जैसे महत्वपूर्ण विभाग सौंपे गए। रालोम को पंचायती राज जैसा व्यापक प्रभाव वाला मंत्रालय देकर सरकार ने ग्रामीण स्तर पर राजनीतिक विस्तार का रास्ता भी मजबूत किया है।

नई फाइलें, नए आदेश, नए आदेशों के साथ दौड़ते सचिवालय के गलियारों में यह संदेश अब स्पष्ट है कि विभागों का बंटवारा हो चुका है और नीतीश–सम्राट–सिन्हा की तिकड़ी ने कामकाज की घड़ी को टक-टक करते हुए आगे बढ़ा दिया है। आने वाले महीनों में यह गठबंधन किस रफ्तार से बिहार की प्रशासनिक मशीनरी को दौड़ाता है, और कौन से फैसले किस दिशा में कहानी बदलते हैं—यह सब अब जनता के इंतज़ार की नई पंक्ति का हिस्सा है।

सागर के पापेट गांव की मस्जिद में खुदाई के दौरान प्राचीन मूर्तियां मिलने से मचा हड़कंप, दोनों पक्ष आमने-सामने आए, प्रशासन ने संभाला मोर्चा

(जीएनएस)। मध्य प्रदेश के सागर जिले की बंडा तहसील का पापेट गांव शुक्रवार को उस समय अचानक सुर्खियों में आ गया, जब स्थानीय मस्जिद परिसर में चल रहे निर्माण कार्य के दौरान जमीन के भीतर से कुछ प्राचीन आकृतियां और पत्थरनुमा मूर्तियां निकल आईं। घटना का विवरण जैसे-जैसे लोगों तक पहुंचा, वैसे-वैसे गांव में जिज्ञासा, आशंका और तनाव—तीनों एक साथ फैलने लगे। ग्रामीणों में चर्चा शुरू हुई कि खुदाई से निकली आकृतियों में से एक भगवान राम और माता सीता के समान प्रतीत होती है। इसी चर्चा ने कुछ ही घंटों में मामले को संवेदनशील बना दिया।

खबर फैलते ही गांव और आसपास के क्षेत्रों से कई लोग मौके पर इकट्ठा होने लगे। हिंदू संगठनों के प्रतिनिधि वहां पहुंचे और खुदाई से निकली आकृतियों के सामने पूजन-अर्चना शुरू कर दी। कुछ देर बाद मुस्लिम पक्ष के लोग भी घटनास्थल पर पहुंचे और उन्होंने आपत्ति जताई कि बिना जांच के किसी वस्तु को मूर्ति मान लेना और धार्मिक क्रिया शुरू कर देना ठीक नहीं है। धीरे-धीरे विवाद की आशंका बढ़ने लगी और भीड़ दो हिस्सों में बंट गई। मौके पर वातावरण तनावपूर्ण होता देख पुलिस और प्रशासन तुरंत सक्रिय हो गया।

स्थानीय प्रशासन ने स्थिति को काबू में लाने के लिए तत्काल सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी। पुलिस अधिकारियों ने मौके से सभी पत्थर और आकृतियां अपने कब्जे में लेकर उन्हें अभिरक्षा में सुरक्षित रख दिया। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि जब तक पुरातत्व विशेषज्ञ इन प्रतीत हो रहीं मूर्तियों की आयु, स्वरूप और उत्पत्ति की वैज्ञानिक रूप से जांच नहीं कर लेते, तब तक किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचना उचित नहीं होगा। एसडीएम नवीन ठाकुर ने बताया कि मस्जिद परिसर में चल रहा निर्माण कार्य फिलहाल रोक दिया गया है और अब आगे की कार्रवाई पूरी तरह जांच रिपोर्ट आने के बाद ही होगी।

गांव में फैले तनाव के बीच एक और दिलचस्प दावा सामने आया। मुस्लिम पक्ष के कुछ ग्रामीणों ने कहा कि खुदाई में केवल सामान्य चंदेली पत्थर निकले हैं और हो सकता है कि किसी शरारती तत्व ने जान-बूझकर मूर्तियों जैसी आकृतियां वहां रख दी हों। उनका कहना था कि मस्जिद की जमीन लगभग 200 वर्ष पहले आवंटित की गई थी और उस समय से यहां कोई भी ऐसा ऐतिहासिक अवशेष नहीं पाया गया है, इसलिए इस घटना की हर पहलू से निष्पक्ष जांच होना आवश्यक है।

उधर हिंदू पक्ष इस बात पर अडिग है कि खुदाई में मिली आकृतियां प्राचीन मूर्तियां हैं और उन्हें संरक्षण तथा वैज्ञानिक प्रमाणन की आवश्यकता है। दोनों पक्षों के दावे और प्रतिदावे के बीच प्रशासन ने यह सुनिश्चित किया कि गांव में शांति बनी रहे। अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कर दिया गया है और रात भर चौकसी भी बढ़ा दी गई ताकि किसी तरह की अफवाह या उत्तेजना फैलने न पाए।

फिलहाल पापेट गांव की हवा में अनिश्चितता और उत्सुकता दोनों ही बराबर तैर रही हैं। पुरातत्व विभाग की टीम से उम्मीद की जा रही है कि वह जल्द ही इन पत्थरनुमा आकृतियों की सच्चाई सामने लाएगी—क्या ये वाकई किसी प्राचीन मंदिर या सभ्यता के अवशेष हैं या केवल साधारण पत्थर जिन्हें गलतफहमी या आरोपों ने विवाद का रूप दे दिया?

भुज की धरती से गृहमंत्री अमित शाह का ऐलान—घुसपैठ रोकना राष्ट्रीय सुरक्षा का संकल्प, एक-एक घुसपैठिए को देश से बाहर करेंगे

(जीएनएस)। भुज। गुजरात के कच्छ जिले के भुज में आयोजित कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने राष्ट्रीय सुरक्षा, मतदाता सूची शुद्धिकरण और घुसपैठ के मुद्दे पर बेहद कड़े शब्दों में अपनी बात रखी। मंच पर आते ही शाह ने साफ कर दिया कि देश की सुरक्षा केवल सीमाओं पर तैनात सैनिकों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि यह भारत के हर नागरिक का दायित्व है कि वह उन प्रक्रियाओं का समर्थन करे जो देश को सुरक्षित, शुद्ध और लोकतांत्रिक रूप से मजबूत बनाती हैं। उन्होंने कहा कि सरकार का संकल्प बिल्कुल स्पष्ट है—भारत की सीमा और लोकतांत्रिक व्यवस्था को प्रदूषित करने वालों को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और देश में मौजूद एक-एक घुसपैठिए को चुन-चुन कर बाहर किया जाएगा। अमित शाह ने अपने भाषण में चुनाव आयोग द्वारा शुरू की गई मतदाता सूची शुद्धिकरण की एसआईआर प्रक्रिया को देश की सुरक्षा का जरूरी हिस्सा बताते हुए कहा कि यह एक ऐसा कदम है, जो भारत की लोकतांत्रिक ताकत को मजबूत करता है। उन्होंने उन राजनीतिक दलों पर खुलकर आरोप लगाया कि वे जानबूझकर घुसपैठियों को बचाने और उन्हें वोट बैंक में बदलने की कोशिश कर रहे हैं। शाह ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जिन पार्टियों ने इस शुद्धिकरण प्रक्रिया का विरोध किया, उन्हें बिहार की जनता ने चुनाव नतीजों के माध्यम से करारा जवाब दिया है।

गृहमंत्री ने यह भी कहा कि मतदाता सूची की सफाई केवल एक प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि यह देश की राजनीतिक पवित्रता की रक्षा का महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने जनता से अपील की कि वे एसआईआर प्रक्रिया में चुनाव आयोग का सहयोग करें, क्योंकि यह अभियान पूरी तरह देशहित में है और इससे यह सुनिश्चित होगा कि भारत के मतदाता सूची में फर्जी, अवैध और बाहरी घुसपैठियों की जगह न बन पाए।

अमित शाह ने अपने संबोधन में सीमा सुरक्षा बल (BSF) की भूमिका की भी जोरदार प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि BSF देश की एकमात्र ऐसी सुरक्षा एजेंसी है जो थल, नभ और जल—तीनों मोर्चों पर एक साथ देश की सीमाओं की रक्षा करती है। उन्होंने बताया कि सीमा सुरक्षा बल के जवान कठिनतम भौगोलिक स्थितियों में भी चौबीसों घंटे सीमा सुरक्षा में जुटे रहते हैं और उनकी प्रतिबद्धता देश को हमेशा सुरक्षित रखती है।

अपने संबोधन में शाह ने कच्छ के भूकंप का उल्लेख करते हुए कहा कि 2001 का विनाशकारी भूकंप भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक आपदाओं में से एक था। उन्होंने बताया कि कई राज्यों में भूकंप आने के दशकों बाद भी उसके अवशेष और विनाश के चिन्ह दिखाई देते हैं, लेकिन कच्छ वह भूमि है जिसने न केवल खुद को संभाला, बल्कि पहले से कहीं अधिक आत्मनिर्भर, सुंदर और विकसित रूप में आगे बढ़कर देश के सामने एक मिसाल पेश की। उन्होंने कहा कि कच्छ के लोगों ने धैर्य, परिश्रम और संकल्प के दम पर असंभव को संभव कर दिखाया है, और यह क्षेत्र आज विकास की दृष्टि से देश के सबसे प्रेरणादायक उदाहरणों में एक है।

भुज में शाह का यह भाषण स्पष्ट संकेत देता है कि केंद्र सरकार आने वाले समय में घुसपैठ, मतदाता सूची शुद्धिकरण और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर और अधिक मजबूती से काम करेगी। उनका यह आह्वान कि देश की जनता चुनाव आयोग की एसआईआर प्रक्रिया में सहयोग करे, यह दिखाता है कि सरकार इस मुद्दे को चुनावी राजनीति से ऊपर उठाकर एक व्यापक राष्ट्रीय सुरक्षा अभियान के रूप में देख रही है। शाह का यह बयान भी राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण माना जा रहा है कि बिहार की जनता ने उन दलों को सख्त संदेश दिया है जो घुसपैठियों के पक्ष में खड़े थे।

'सागर कवच' अभ्यास में समुद्री सुरक्षा का दमखम, महाराष्ट्र-गोवा तट पर ICG ने परखी खतरे से निपटने की वास्तविक क्षमता

(जीएनएस)। महाराष्ट्र और गोवा के तटीय इलाकों में भारतीय तटरक्षक बल द्वारा आयोजित बड़े पैमाने के सुरक्षा अभ्यास 'सागर कवच 02/25' ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि भारत की पश्चिमी समुद्री सीमा किसी भी खतरे के प्रति कितनी सशक्त, संगठित और अत्याधुनिक सुरक्षा तंत्र से लैस है। 19 और 20 नवंबर 2025 को दो दिनों तक चले इस व्यापक अभ्यास में समुद्री सुरक्षा से जुड़े करीब तीन दर्जन केंद्रीय और राज्य स्तरीय संगठनों ने एक साथ भाग लिया। समुद्र, तट और बंदरगाह—तीनों मोर्चों पर सुरक्षा की असल तैयारी को परखने के लिए वास्तविक स्थिति की तरह नकली खतरे खड़े किए गए और सभी एजेंसियों ने मिलकर इनका जवाब दिया।

'सागर कवच' का मुख्य उद्देश्य यह जांचना था कि महाराष्ट्र-गोवा तट से लगे इलाकों में सुरक्षा व्यवस्था कितनी मजबूत है, तटीय गांवों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों, सैन्य ठिकानों, अपतटीय प्लेटफॉर्मों, महत्वपूर्ण बंदरगाहों और नौकाओं की सुरक्षा में कोई कमी तो नहीं है, और क्या विरोधी तत्व समुद्र के रास्ते घुसपैठ, आतंकवादी गतिविधि या तोड़फोड़ के प्रयास कर सकेंगे। अभ्यास की कठिनाई इस बात से समझी जा सकती है कि इसमें केंद्रीय स्तर की 19 एजेंसियां—जिनमें नौसेना, तटरक्षक, इंटेलिजेंस ब्यूरो, कस्टम, CISF, BSF (वाटर विंग), DG Shipping आदि जैसे संगठन शामिल थे—और राज्य की 13 एजेंसियां—जिनमें मरीन पुलिस, बंदरगाह विभाग, मत्स्य पालन विभाग, महाराष्ट्र समुद्री बोर्ड, आपदा प्रबंधन इकाइयां और स्थानीय जिला प्रशासन शामिल रहे—एक साथ मैदान में सक्रिय थीं। इसके साथ ही महाराष्ट्र और गोवा के 1 बड़े और 21 छोटे बंदरगाह पूरी तरह अभ्यास का हिस्सा बने। लगभग 6,000 से ज्यादा सुरक्षाकर्मी, 115 से अधिक समुद्री और हवाई संसाधन, गश्ती जहाज़, तेज नावें, निगरानी विमान, चेतक हेलिकॉप्टर और एयर कुशन व्हीकल लगातार समुद्र पर अभ्यास में लगे रहे।

अभ्यास की पृष्ठभूमि उसी अक्टूबर की योजना बैठक में तैयार कर ली गई थी, जिसकी अध्यक्षता 10 अक्टूबर 2025 को मुंबई मंत्रालय में महाराष्ट्र के मुख्य सचिव ने की थी। प्रारंभिक योजना से लेकर अंतिम निष्पादन तक सभी एजेंसियों ने बिना किसी रुकावट के जिस तरह सहयोग किया, उसने तटीय सुरक्षा व्यवस्था में इंटरऑपरेबिलिटी—यानी विभिन्न एजेंसियों के बीच तालमेल—को एक नए स्तर पर पहुंचा दिया। नकली समुद्री हमले, संदिग्ध नौकाओं की एंट्री, घुसपैठियों की सूचना, बंदरगाहों पर तोड़फोड़ की कोशिश और समुद्री मार्ग से संभावित आतंकी गतिविधि जैसे परिदृश्यों को अभ्यास का हिस्सा बनाया गया। इन्हें रोकने के लिए नौसेना के युद्धपोत, तटरक्षक के तेज गश्ती जहाज, डोर्नियर विमान, चेतक हेलिकॉप्टर, मरीन पुलिस की नावें, कस्टम और CISF की समुद्री इकाइयाँ और मत्स्य पालन विभाग की निगरानी टीमें लगातार कार्रवाई में लगी रहीं। भारतीय तटरक्षक बल ने इस अभ्यास के माध्यम से यह साबित किया कि पश्चिमी समुद्री सीमा पर उसका सुरक्षा कवच कितना व्यापक और कारगर है। 'सागर कवच' के दौरान संचार नेटवर्क, सूचना आदान-प्रदान की गति, खतरे के समय सामूहिक प्रतिक्रिया की क्षमता और सभी एजेंसियों के बीच तत्काल समन्वय की दक्षता को भी परखा गया। अभ्यास ने दिखाया कि समुद्र के रास्ते किसी भी अवैध गतिविधि—चोरी-तस्करी से लेकर आतंकवादी घुसपैठ तक—का मुकाबला करने के लिए भारत का तटीय सुरक्षा तंत्र पूरी तरह सजग और सक्षम है।

अभ्यास के बाद यह साफ हुआ कि समुद्री सुरक्षा केवल तटरक्षक बल का काम नहीं, बल्कि केंद्र और राज्यों के संयुक्त प्रयास से ही तटीय क्षेत्र सुरक्षित रह सकता है। 'सागर कवच 02/25' की सफलता ने यह भी दर्शाया कि भारत अपनी समुद्री सीमाओं की सुरक्षा को लेकर कितनी गंभीरता से तैयारी करता है और किस तरह हर मोर्चे पर संभावित खतरे का पूर्वानुमान लगाकर उससे निपटने की क्षमता विकसित कर चुका है। यह अभ्यास न केवल सुरक्षा का मूल्यांकन था, बल्कि यह एक संदेश भी था कि भारत अपनी तटरेखा, तटीय नागरिकों, जहाजी यातायात और राष्ट्रीय संपत्तियों की रक्षा के लिए हर समय सजग और तैयार है।

धनखड़ के स्वागत में BJP नेताओं की गैरमौजूदगी पर दिग्विजय का हमला, बोले- 'यूज़ एंड थ्रो' पार्टी की पहचान बन चुका है

(जीएनएस)। पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के जयपुर आगमन पर भारतीय जनता पार्टी के किसी भी बड़े नेता का एयरपोर्ट न पहुंचना शुक्रवार को राजनीतिक चर्चा का विषय बन गया। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने इस अवसर को सीधे बीजेपी पर प्रहार का मंच बना दिया। उन्होंने कहा कि पार्टी का यह रवैया उसके मूल चरित्र को उजागर करता है—एक ऐसी नीति जिसमें लोगों का 'उपयोग करो और फेंक दो' तरीका लंबे समय से अपनाया जा रहा है। दिग्विजय ने कहा कि धनखड़ जैसे पद पर रह चुके व्यक्तित्व को सम्मान देने में भी यदि पार्टी पीछे हट जाए, तो यह साफ संकेत है कि बीजेपी केवल उन लोगों को महत्व देती है जिनसे उसे तत्काल राजनीतिक लाभ मिलता है।

दिग्विजय सिंह ने पत्रकारों से बातचीत में आरोप लगाया कि बीजेपी में व्यक्ति का सम्मान उसकी निष्ठा से नहीं, बल्कि उसकी उपयोगिता से मापा जाता है। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्य है कि उपराष्ट्रपति जैसे संवैधानिक पद पर रहे व्यक्ति के लिए भी पार्टी के पास कोई समय नहीं था। दिग्विजय ने आगे बताया कि उन्होंने धनखड़ से मिलने के लिए समय भी मांगा है, क्योंकि निजी स्तर पर उनके बीच सम्मानजनक संबंध हैं जो राजनीति से अलग हैं। उन्होंने कहा कि वह आरएसएस को लेकर टिप्पणी करने की स्थिति में नहीं हैं क्योंकि धनखड़ संघ के एक कार्यक्रम में शामिल होने आए थे और संघ के कार्यक्रमों का अपना अलग ढांचा व उद्देश्य होता है। चार महीने पहले स्वास्थ्य कारणों का हवाला देकर उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा देने वाले जगदीप धनखड़ ने शुक्रवार को पहली बार सार्वजनिक मंच से संबोधन किया। यह कार्यक्रम आरएसएस के वरिष्ठ पदाधिकारी मनमोहन वैद्य की नई पुस्तक के विमोचन के अवसर पर आयोजित किया गया था। विमोचन कार्यक्रम के दौरान धनखड़ का हल्का-फुल्का अंदाज़ भी देखने को मिला। जब उन्हें याद दिलाया गया कि उन्हें शाम 7:30 बजे दिल्ली की उड़ान पकड़नी है, तो उन्होंने हंसते हुए कहा कि वह कभी भी अपनी ड्यूटी को पीछे नहीं छोड़ सकते। उन्होंने खुद ही यह जोड़ा कि उनका हाल का अतीत इसका बड़ा सबूत है। इस टिप्पणी पर सभागार में मौजूद लोगों की हंसी छूट पड़ी।

अपने संबोधन में धनखड़ ने संघ की विचारधारा की खुले शब्दों में सराहना की। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक उन सभी गलत धारणाओं का जवाब है जो संघ को लेकर लगातार फैलाई जाती हैं—कभी इसे अति दक्षिणपंथी संगठन कहा जाता है, तो कभी गांधी हत्या से जोड़ने की कोशिश की जाती है। धनखड़ ने कहा कि यह सब निराधार आरोप हैं और संघ की वास्तविक सोच व कार्यशैली देश सेवा, राष्ट्र निर्माण और सांस्कृतिक एकता पर आधारित है।

कार्यक्रम में धनखड़ की बातों और एयरपोर्ट पर उनकी अगवानी से जुड़ी राजनीतिक उठापटक ने एक बार फिर यह दिखा दिया कि भारतीय राजनीति में व्यक्तिगत सम्मान और संगठनात्मक प्राथमिकताओं का संघर्ष किस तरह हर दिन चर्चाओं को जन्म देता रहता है। दिग्विजय सिंह के तीखे बयान ने इस बहस को और तेज कर दिया है, जबकि बीजेपी की चुप्पी इसे और दिलचस्प बना रही है। आने वाले दिनों में इस मुद्दे पर और प्रतिक्रियाएँ देखने को मिलना तय है।

बाड़मेर में सिविल एयरपोर्ट का सपना अब सच होने की कगार पर, सरकार ने 158 बीघा जमीन पर खरीद-फरोख्त रोककर प्रक्रिया को दी रफ्तार

(जीएनएस)। राजस्थान के सुदूर पश्चिम में बसे बाड़मेर जिले के लोगों के लिए दशकों से एक सपना पल रहा था—अपने ही जिले में एक ऐसा आधुनिक सिविल एयरपोर्ट हो जहां से उड़ान भरते हुए दुनिया से सीधे जुड़ने का एहसास हो। यह सपना कई बार घोषणाओं, बैठकों, और कागज़ी फाइलों की आवाज़ में खोता चला गया, लेकिन जनता की आंखों में इसकी जो चमक थी वह कभी कम नहीं हुई। अब, इतने वर्षों की प्रतीक्षा के बाद, इस सपने को साकार करने की दिशा में सरकार ने एक बड़ा और निर्णायक कदम उठाया है। राज्य सरकार ने उन 158 बीघा जमीन पर किसी भी तरह की खरीद-फरोख्त, नियमन या संरचनात्मक बदलाव पर रोक लगा दी है, जिन्हें एयरपोर्ट के टर्मिनल और अप्रोच रोड के लिए अधिग्रहित किया जाना है। यह निर्णय न सिर्फ प्रशासनिक क्रियान्वयन की गंभीरता को दर्शाता है, बल्कि इस बात का भी संकेत है कि बाड़मेर के विकास का पहिया अब तेज़ गति से घूमने वाला है।

बाड़मेर में एयरपोर्ट निर्माण का विचार नया नहीं है। 2018-19 में केंद्र सरकार ने उत्तरलाई में सिविल एयरपोर्ट की स्थापना की घोषणा की थी, परंतु प्रदेश और केंद्र के बीच तालमेल की कमी तथा राजनीतिक बदलावों के चलते यह प्रोजेक्ट धीरे-धीरे ठंडे बस्ते में डालता गया। बीते कुछ वर्षों में यह मुद्दा केवल चर्चाओं में रह गया था, लेकिन जमीन पर कुछ ठोस होता दिखाई नहीं दे रहा था। अब जब प्रदेश की नई भजनलाल सरकार ने इस दिशा में ठोस कदम उठाते हुए भूमि अधिग्रहण को स्वीकृति दे दी है, तब लग रहा है कि लंबे इंतज़ार के बाद बाड़मेर को उसका सपना मिलने जा रहा है। सरकार ने न केवल जमीन चिन्हित कर ली है, बल्कि 5.7 करोड़ रुपये की धनराशि भी जारी कर दी है, जो खातेदारों को भुगतान के लिए निर्धारित है। 65.43 एकड़ यानी 158 बीघा में से लगभग 62.96 एकड़ जमीन निजी खातेदारों की है, जिनको जल्द ही मुआवजा दिए जाने की प्रक्रिया शुरू होगी। एयरपोर्ट के लिए जिस जगह का चयन किया गया है, वह उत्तरलाई एयरफोर्स स्टेशन के बिल्कुल पास है। इस क्षेत्र के चकलानी, बेरीगांव और लालानियों की ढाणी जैसे गांवों की भूमि पर एयरपोर्ट टर्मिनल और उसका पूरा कॉम्प्लेक्स विकसित किया जाएगा। उड़ानों के लिए एयरफोर्स के मौजूदा रनवे का ही उपयोग किया जाएगा, जिससे लागत कम होगी और निर्माण की प्रक्रिया भी तेजी से आगे बढ़ सकेगी। इस क्षेत्र का सामरिक महत्व बहुत अधिक है क्योंकि बाड़मेर पाकिस्तान से 228 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा साझा करता है। एयरपोर्ट बनने से सीमापर सुरक्षा बलों, खासतौर पर बीएसएफ और एयरफोर्स के लिए रसद, आवश्यक उपकरणों की आपूर्ति और अन्य व्यवस्थाएं और भी सहज और तेज हो जाएंगी।

बाड़मेर की भूमि ऊर्जा का धनी भंडार है। यहां प्रतिदिन 2 लाख बैरल से अधिक क्रूड ऑयल निकलता है, जो भारत के कुल उत्पादन का लगभग 18 प्रतिशत हिस्सा है। इसके अलावा प्राकृतिक गैस, कोयला और अन्य बहुमूल्य खनिज भंडारों के कारण यह क्षेत्र उद्योगों, कंपनियों और विशेषज्ञों की लगातार आवाजाही का केंद्र बना हुआ है। HPCL और राज्य सरकार द्वारा यहां BS6 मानक की अत्याधुनिक रिफाइनरी और विशाल पेट्रोकेमिकल हब स्थापित किया जा रहा है, जिससे आने वाले समय में इस क्षेत्र में हजारों रोजगार और नए कारोबारी अवसर पैदा होंगे। ऐसे में एयरपोर्ट का होना इस पूरे औद्योगिक और ऊर्जा सेक्टर के लिए रीढ़ की हड्डी जैसा होगा। अनुमान लगाया जा रहा है कि सिर्फ पेट्रोलियम और ऊर्जा क्षेत्र से ही एयरपोर्ट को 30 से 40 फीसदी तक का यात्री भार मिल सकता है, जो इसकी आर्थिक सफलता सुनिश्चित करेगा।

पर्यटन की दृष्टि से भी बाड़मेर का महत्व कम नहीं है। यहां की मरुस्थलीय संस्कृति, लोकगीत, वास्तुकला, हस्तशिल्प और सीमावर्ती इलाकों की प्राकृतिक सुंदरता हर वर्ष हजारों देशी और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करती है। एयरपोर्ट बनने के बाद ना सिर्फ पर्यटन में गति आएगी, बल्कि बाड़मेर का पारंपरिक हस्तशिल्प, लकड़ी का काम और स्थानीय कला अंतरराष्ट्रीय बाजारों से भी सीधे जुड़ेगा।

सरकार द्वारा लागू की गई खरीद-फरोख्त पर रोक यह सुनिश्चित करेगी कि भूमि पर किसी प्रकार का अवैध निर्माण, विवाद या मूल्य वृद्धि का खेल न हो, जो प्रोजेक्ट में अनावश्यक देरी कर सकते हैं। यह कदम स्पष्ट संकेत है कि प्रशासन अब इस प्रोजेक्ट को किसी भी कीमत पर लंबित नहीं रहने देना चाहता। स्थानीय निवासियों में अब उत्साह है कि जिस एयरपोर्ट का सपना वे कई वर्षों से देखते आए हैं, वह अब कुछ ही समय में उनकी आंखों के सामने खड़ा होगा।

बाड़मेर जैसे सीमावर्ती जिले के लिए यह एयरपोर्ट केवल एक यात्री सुविधा नहीं, बल्कि विकास, सुरक्षा, उद्योग, पर्यटन और आधुनिकता की नई उड़ान है। यह सिर्फ एक निर्माण परियोजना नहीं, बल्कि उस बदले हुए राजस्थान का प्रतीक है जो अब अपनी भौगोलिक सीमाओं की कठिनाइयों से ऊपर उठकर गति, नवाचार और वैश्विक संपर्क के नए अध्याय लिखने के लिए तैयार है।

कोहरे को चीरती रेलगाड़ियां: इज़्ज़तनगर मंडल ने तैनात किए 250 फॉग सेफ डिवाइस, बढ़ी रफ्तार और सुरक्षा

(जीएनएस)। सर्दियों के शुरू होते ही उत्तर भारत में घने कोहरे की मार रेलवे संचालन के लिए हमेशा एक बड़ी चुनौती रही है। लेकिन इस बार इज़्ज़तनगर मंडल ने कोहरे के मौसम को मात देने की ठोस तैयारी पहले से कर ली है। यात्रियों की सुरक्षा और समयबद्ध संचालन को सर्वोच्च प्राथमिकता मानते हुए पूर्वोत्तर रेलवे के इज़्ज़तनगर मंडल ने कुल 250 जीपीएस-आधारित फॉग सेफ डिवाइस ट्रेनों में स्थापित कर दिए हैं, जो लोको पायलट को कोहरे में भी आगे का रास्ता बिल्कुल साफ दिखाई देने जैसा अनुभव कराते हैं। घना कोहरा चाहे जितना भी हो, यह तकनीक सिग्नलों की स्थिति, आगे मौजूद मोड़ों, पुलों और महत्वपूर्ण लोकेशन की सटीक जानकारी पहले ही दे देती है, जिससे ट्रेन की गति को सुरक्षित सीमा में रखते हुए यात्रा को तेज़ और सुचारू बनाया जा सके।

फॉग सेफ डिवाइस लगने के बाद रेलवे ने कोहरे में ट्रेनों की अधिकतम गति को 60 किलोमीटर प्रति घंटे से बढ़ाकर 75 किलोमीटर प्रति घंटा कर दिया है। इसका सीधा फायदा यात्रियों को मिलेगा, क्योंकि सर्दियों के मौसम में सबसे ज्यादा शिकायत ट्रेन लेट होने की ही रहती है। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक संजीव शर्मा ने बताया कि रेलवे की प्राथमिकता यात्रियों को सुरक्षित, तेज और बिना बाधा यात्रा उपलब्ध कराना है और फॉग सेफ डिवाइस इस दिशा में बड़ा कदम है। इससे न केवल कोहरे में रफ्तार बढ़ेगी, बल्कि लोको पायलट को हर स्थिति का पूर्वानुमान भी मिल जाएगा, जिससे रेल संचालन में होने वाली अनिश्चितता काफी हद तक दूर होगी।

इज़्ज़तनगर मंडल ने सिर्फ डिवाइस लगाने पर ही जोर नहीं दिया, बल्कि पूरे सिग्नलिंग सिस्टम को भी मजबूत किया है। सिग्नल पोस्ट और लेवल क्रॉसिंग पर ल्यूमिनस स्ट्रिप लगाई गई हैं, ताकि कोहरे में कम दृश्यता की स्थिति में भी सिग्नल लोको पायलट को साफ दिखाई दे सके। इसके साथ ही सभी सिग्नल साइटिंग बोर्डों पर स्पष्ट और चमकीली लाइन मार्किंग कर दी गई है, जिससे दूरी और दिशा की पहचान पहले से आसान हो गई है। मंडल अधिकारियों के अनुसार, लोको पायलट और सहायक लोको पायलटों को कोहरे में ट्रेन चलाने से जुड़ी सभी विशेष सावधानियों पर काउंसलिंग दी गई है और उन्हें ठंड और धुंध के मौसम की खास स्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपडेट किया गया है।

अब इज़्ज़तनगर मंडल में चलने वाली सभी पैसेंजर और मालगाड़ियों पर फॉग सेफ डिवाइस का उपयोग अनिवार्य कर दिया गया है, ताकि किसी भी प्रकार की मानवीय चूक की संभावना कम की जा सके। घने कोहरे में ट्रेन संचालन भारत की रेलवे प्रणाली का सबसे कठिन हिस्सा माना जाता है, लेकिन अत्याधुनिक तकनीक, मजबूत सिग्नलिंग और प्रशिक्षित स्टाफ की मदद से इज़्ज़तनगर मंडल ने इस चुनौती को अवसर में बदल दिया है। इस तैयारी ने साफ कर दिया है कि इस सर्दी रेलवे की पटरियों पर कोहरा अब रफ्तार को रोक नहीं पाएगा। यात्रियों को लंबे इंतज़ार और घंटों की देरी से मिलने वाली राहत आने वाले दिनों में स्पष्ट रूप से दिखाई देगी।